नवंबर, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 11

www.indiatibet.net

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

तिब्बत देश

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के आधिकारिक प्रवक्ता, अतिरिक्त सचिव तेनजिन लेक्षय, सभा को संबोधित करते हुए

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

नवंबर, 2024 , वर्ष : 45 अंक : 11

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

14 नवंबर 2024 को लिबरल इनिशिएटिव पार्टी के सांसद रोड्रिगो सारावा के साथ सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग।

समाचार -

• परम पावन दलाई लामा ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को बधाई दी 1

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को बधाई दी 2

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में उनके फिर से निर्वाचन पर बधाई दी 3

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में पुनः निर्वाचित होने पर कांग्रेसी जिम मैकगवर्न को बधाई दी 4

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कलिम्पोंग में तिब्बती संस्थानों का दौरा किया, तिब्बत से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर तिब्बतियों को संबोधित किया 5

• सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने गंगटोक में तिब्बतियों को संबोधित किया, इंटरनेट पर गलत सूचना से सतर्क रहने का आग्रह किया 6

• सिक्योंग की पुर्तगाल की पहली यात्रा परम पावन की पुर्तगाल यात्राओं का अनुसरण कर रही है 7

• स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने भारतीय सांसदों- ए.डी. सिंह और श्री दरोगा प्रसाद सरोज से मुलाकात की 8

• स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने सिक्किम के तुमलोंग में माइंडरोलिंग जांग-डोक-पलरी मंदिर के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया 9

• . डिप्टी स्पीकर ने क्यब्जे समदोंग रिनपोछे के ८५वें जन्मदिवस समारोह में तिब्बत के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डाला 10

• डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने 'ऑस्ट्रेलिया-तिब्बत परिषद' के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की, तिब्बत मुद्दे के समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया 11

• . स्पीकर के नेतृत्व में ब्रिटिश संसद के दौरे पर तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल 12

समाचार -

• तिब्बती सांसदों ने १०५वें गदेन त्रिपा के पट्टाभिषेक समारोह में भाग लिया 13

• सीआरओ शावांग फुंट्सोक के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने लीज नवीकरण मुद्दे पर चर्चा करने के लिए माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से मुलाकात की 14

• जर्मनी में यूरोप-तिब्बत एडवोकेसी: तिब्बती सांसदों ने जर्मन सांसदों के साथ तिब्बत में गंभीर स्थिति पर चर्चा की 15

• . तिब्बती प्रतिनिधियों ने 'कॉप-२९ संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन' के पहले दिन डेरगे बांध की चिंताओं को उजागर किया 16

• . इटली के दानदाताओं ने बाइलाकुप्पे में लुगसुंग समदुप्लिंग तिब्बती बस्ती का दौरा किया 17

• पटना में 'तिब्बत मुक्ति साधना और भारत-चीन संबंध' पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित 18

• डीआईआईआर ने तिब्बत में मानवाधिकार उल्लंघन के खिलाफ ७९वें यूएनजीए में बयान देने वाले १५ देशों के प्रति आभार व्यक्त किया 19

• बौद्ध धर्म के माध्यम से एशिया को मजबूत बनाने के लिए 'एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन' 20

• १३वीं तवांग तीर्थयात्रा देशभक्ति पूर्ण भव्यता के साथ रवाना 21

• तिब्बत सूचना कार्यालय ने 'चाइनीज अलायंस फॉर डेमोक्रेसी' की संगोष्ठी में भाग लिया 22

• . अवैध रूप से कैद किए गए तिब्बती पर्यावरणविद् को खराब स्वास्थ्य के कारण १५ साल के बाद जेल से रिहा किया गया 23

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा
नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की वेबसाइट

coordinator@indiatibet.net

24
• चीनी अधिकारियों द्वारा भिक्षुओं और नागरिकों को निशाना बनाए जाने के क्रम में न्गाबा से चार तिब्बतियों की अघोषित गिरफ़्तारी

25
• तिब्बत में मंदारिन में भाषण प्रतियोगिताएं मूल तिब्बती भाषा को मिटाने का प्रयास : विशेषज्ञ

◆ तिब्बती जागरुकता अभियान से अंतरराष्ट्रीय समर्थन में लगातार वृद्धि

हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार का पिछले कुछ समय से सर्वाधिक जोर दो विषयों पर है। ये दो विषय हैं- तिब्बत के संबंध में सुव्यवस्थित तरीके से जागरुकता (अवेयरनेस) फैलाना तथा तिब्बत के पक्ष में अधिकाधिक समर्थन (एडवोकेसी) जुटाना। इसी दृष्टि से दोनों अभियान (कैंपेन) एक साथ चलाये जा रहे हैं। अवेयरनेस और एडवोकेसी परस्पर जुड़े हैं। तिब्बत का प्रष्न एक अंतरराष्ट्रीय प्रष्न बन चुका है तथा इसके पक्ष में अंतरराष्ट्रीय सहयोग-समर्थन लगातार बढ़ता जा रहा है। भविष्य में इसकी गति और भी तेज हो इसके लिए जागरुकता एवं समर्थन अभियान को जारी रखना तर्कसंगत है।

निर्वासित तिब्बत सरकार के सिक्योंग (राज्याध्यक्ष) माननीय पेंपा त्सेरिंग ने अभी नवंबर, 2024 में अपनी यूरोपीय देषों की यात्रा में तिब्बत समस्या से जुड़े विभिन्न बिन्दुओं को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया है। उन्होंने पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस में तिब्बत संबंधी चीनी दुष्प्रचार का पर्दाफाष किया है। चीन ने स्वतंत्र तिब्बत देष पर सन् 1959 में अवैध नियन्त्रण कर लिया था। चीन की सीमा चीन की दीवार है। चीन की दीवार के बाहर चीन का अवैध कब्जा है। तिब्बत अगर चीन का अभिन्न अंग होता तो वहाँ चीन द्वारा मानवाधिकारों का हनन नहीं किया जाता। तिब्बत में प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण का सुनियोजित विनाष जारी है। तिब्बती पहचान संकटग्रस्त है। तिब्बती भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति, इतिहास और पवित्र धार्मिक स्थल समाप्ति के कगार पर हैं। हालात ऐसी हो गई है कि शांतिप्रिय तिब्बती आंदोलनकारी आत्मदाह कर रहे हैं। हाल के वर्षों में ऐसे बलिदानियों की संख्या डेढ़ सौ से अधिक हो चुकी है।

पेंपा त्सेरिंग ने पुर्तगाल, स्पेन और फ्रांस में सभी वर्गों से सम्पर्क किया है। परिणामतः जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, मीडियाकर्मी, युवापीढ़ी तथा विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों ने साम्राज्यवादी चीन सरकार की दमनकारी तिब्बत नीति के विरोध में और व्यवस्थित रूप से संघर्ष करने का निष्चय किया है।

जागरुकता एवं समर्थन अभियान के अन्तर्गत निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष खेंपो सोनम सेम्फेल के नेतृत्व में संसदीय प्रतिनिधिमंडल ने भी इसी नवंबर में इंगलैंड और स्कॉटलैंड की यात्रा की। इसके द्वारा प्रस्तुत प्रामाणिक तथ्यों ने उपनिवेषवादी चीन सरकार के अलोकतांत्रिक एवं मानवताविरोधी चरित्र को उजागर कर दिया है। निर्वासित सरकार की मांग है कि अपने संविधान एवं राष्ट्रीयता संबंधी कानून के अनुकूल ही चीन सरकार तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता दे। अपने पास वह वैदेषिक मामले और प्रतिरक्षा रखे। षिक्षा, कृषि एवं अन्य सभी विषय तिब्बती प्रषासन को सौंप दे। इससे चीन की भौगोलिक एकता-अखंडता - संप्रभुता सुरक्षित रहेगी और तिब्बतियों को स्वषासन का अधिकार मिल जायेगा।

चीन सरकार का दुराग्रहपूर्ण हठ है कि वह तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता देने को भी तैयार नहीं है। उसने अभी नकली स्वायत्तता दे रखी है। उसने स्वायत्तता के नाम पर तिब्बत के भौगोलिक क्षेत्र को काटकर चीनी क्षेत्र में मिला लिया है। शेष तिब्बती क्षेत्र पर चीनी प्रषासन एवं चीनी लोगों का कब्जा है। इसका चीनीकरण जारी है तथा तिब्बती नामों की जगह चीनी नाम थोपे जा रहे हैं। समस्या का व्यावहारिक समाधान यही है कि चीन सरकार तिब्बत को वास्तविक स्वायत्तता प्रदान करे।

भारत में तिब्बत समर्थक चाहते हैं कि तिब्बत को पूरी आजादी मिले लेकिन वे भी तिब्बती समुदाय की सिर्फ वास्तविक स्वायत्तता की मांग से सहमत हैं। तिब्बती समाज की उत्तरपूर्व भारत के अष्टलक्ष्मी प्रांतों (असम, मेघालय, त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेष एवं सिक्किम) में कई बस्तियाँ हैं। अभी तिब्बती कासाग (प्रषासन) ने अरुणाचल प्रदेष, मेघालय और सिक्किम की तिब्बती बस्तियों (सेटलमेंट्स) का प्रवास किया। वहाँ उन्होंने तिब्बतियों के विचार सुने। सभी तिब्बती भारत की केन्द्रीय एवं प्रांतीय सरकारों तथा भारतीय जनता के प्रति हृदय से कृतज्ञ हैं। वे भारत में शरणार्थी हैं लेकिन भारतीयों के साथ मिल जुलकर रहते हैं। भारत में उन्हें लगातार सहयोग-समर्थन प्राप्त है। उनके अनुसार परमपावन दलाईलामा ठीक ही भारत को अपना दूसरा घर तथा तिब्बत को भारत का चेला कहते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों के मुताबिक बौद्ध दर्षन भारत से ही तिब्बत गया था इसलिये भारत गुरु है और तिब्बत चेला।

भारत के अष्टलक्ष्मी प्रदेषों में तिब्बती समुदाय ने बौद्ध दर्षन को बहुत मजबूत किया है। बौद्ध दर्षन पर आधारित भारतीय ज्ञान की नालंदा परंपरा ने ही भारत को "विष्वगुरु" बनाया था। तिब्बती समुदाय उसी नालंदा परंपरा को गर्वपूर्वक अपने आचार-विचार-व्यवहार से समृद्ध कर रहा है। दलाईलामा अपने सभी प्रवचनों एवं व्याख्यानों में नालंदा परंपरा का गौरवगान करते हुए इसमें निहित मानवीय मूल्यों को अपनाने पर जोर देते हैं। उनकी प्रेरणा से भारत स्थित सभी तिब्बती षिक्षण संस्थान मानवीय मूल्यों शांति, अहिंसा, करुणा, सद्भाव तथा सहयोग आदि को सबके लिए उपयोगी बताते हैं। इन्हें अपनाने से ही संपूर्ण विष्व में रचनात्मक वातावरण सुदृढ़ होगा।

दुर्भाग्यवष चीन सरकार मानवीय मूल्यों के विपरीत क्रूरतापूर्ण नीति पर अग्रसर है। इसके बावजूद दलाईलामा के हृदय में चीनी लोगों के लिए भी करुणा है। आष्चर्य है कि चीन सरकार उन्हें भी अलगाववादी तथा आतंककारी समझती है। शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित दलाईलामा को अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार-सम्मान मिले हैं। वे अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को संबोधित करते हैं। ये बातें चीन को प्रभावित नहीं करतीं क्योंकि वह विस्तारवादी है। वह अंतरराष्ट्रीय कानून, लोकतांत्रिक आदर्ष तथा मानवता का सम्मान नहीं करता।

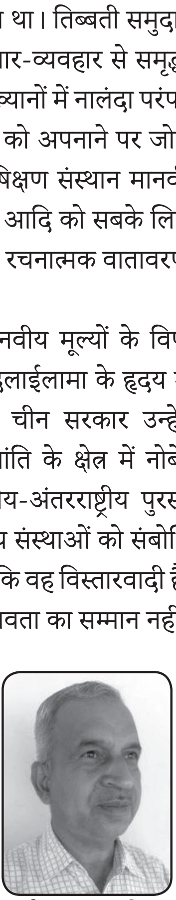

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)

मो.-9079352370, 8764060406
E-mail & Facebook: - shyamnathji@gmail.com

◆ १. परम पावन दलाई लामा ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को बधाई दी

०७ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। परम पावन दलाई लामा ने अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रम्प की जीत पर उन्हें पत्र लिखकर बधाई दी है।

परम पावन ने लिखा, 'मैं लंबे समय से लोकतंत्र, स्वतंत्रता और कानून के शासन के रखवाले के तौर पर अमेरिका की प्रशंसा करता रहा हूं। दुनिया को अमेरिका के लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और नेतृत्व से बहुत उम्मीदें हैं। दुनिया के कई हिस्सों में अनिश्चितता और उथल-पुथल के इस माहौल में मुझे उम्मीद है कि आप शांति और स्थिरता लाने की दिशा में विश्व का नेतृत्व करेंगे।

तिब्बती लोगों और मुझे अलग-अलग समय के सभी अमेरिकी राष्ट्रपतियों और अमेरिकी लोगों का समर्थन प्राप्त करने का अवसर मिला है, जो हमारी प्राचीन बौद्ध संस्कृति की रक्षा और संरक्षण के हमारे प्रयास में है। बौद्ध धर्म शांति, अहिंसा और करुणा की संस्कृति है, जिसमें समग्र रूप से मानवता का कल्याण करने की क्षमता है।

परम पावन ने बधाई- पत्र का समापन करते हुए लिखा, 'मैं अमेरिकी लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने तथा विश्व में शांति में योगदान देने के लिए आने वाली अनेक चुनौतियों का सामना करने में आपकी सफलता की कामना करता हूं।'

◆ ०२. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को बधाई दी

०८ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति महामहिम डोनाल्ड ट्रम्प को अमेरिका के ४७वें राष्ट्रपति के रूप में चुने जाने पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों की ओर से हार्दिक बधाई देने के लिए पत्र लिखा।

सिक्योंग ने पत्र में लिखा है, 'इस चुनौतीपूर्ण समय में अमेरिका का नेतृत्व वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और वैश्विक स्थिरता के- शांति, समृद्धि और कानून के शासन जैसे स्तंभों की रक्षा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण शक्ति बना हुआ है।'

सिक्योंग ने आगे लिखा, 'दशकों से संयुक्त राज्य अमेरिका तिब्बत के सुदृढ़ सहयोगी के रूप में खड़ा है। अमेरिकी कांग्रेस और अमेरिका के अब तक के प्रशासनों ने द्विदलीय समर्थन के साथ मजबूत और अटूट तिब्बत नीति का प्रदर्शन किया है। हम आपके देश से प्राप्त समर्थन के लिए आभारी हैं और आपके नेतृत्व में नई आशा और विश्वास के साथ इस दीर्घकालिक प्रयास को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर हैं।'

◆ ०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में उनके फिर से निर्वाचन पर बधाई दी

०८ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों की ओर से स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में उनके पुनः निर्वाचित होने पर पत्र लिखकर हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

अपने पत्र में सिक्योंग ने लिखा, 'कांग्रेस में आपकी निरंतर उपस्थिति न केवल आपके मतदाताओं के लिए बल्कि दुनिया भर में मानवाधिकारों और लोकतंत्र के पैरोकारों के लिए आशा की किरण बनी हुई है। सिक्योंग ने इसके साथ ही स्पीकर एमेरिटा नैन्सी पेलोसी के परम पावन दलाई लामा के साथ विशेष जुड़ाव और तिब्बती मुद्दे के प्रति उनकी दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के लिए गहरा आभार व्यक्त किया।

सिक्योंग ने पत्र में लिखा है, 'तिब्बती अधिकारों के लिए आपका स्थायी समर्थन और वकालत तिब्बत को लेकर बने अमेरिकी कानूनों में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। इन कानूनों को पारित कराने में कांग्रेस में आपने समर्थन दिया है। हम इस मिशन में आपकी दृढ़ भूमिका के लिए आपके बहुत आभारी हैं। अपने उल्लेखनीय राजनीतिक जीवन के दौरान, आपने लगातार मानवाधिकारों और मानवीय गरिमा के लिए दृढ प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। आपकी यह प्रतिबद्धता न केवल तिब्बती लोगों के लिए बल्कि दुनिया भर के उत्पीड़ित समुदायों के लिए भी रही है। आपका सैद्धांतिक नेतृत्व आशा की किरण के रूप में चमकता है, जो दुनिया भर के लाखों लोगों को न्याय और करुणा के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित करता है'।

इन चुनौतीपूर्ण समय में उनकी आवाज़ और मार्गदर्शन के महत्व को स्वीकार करते हुए सिक्योंग ने उनके समर्थन के लिए गहरा आभार व्यक्त किया और तिब्बत और सभी उत्पीड़ित लोगों के लिए न्याय के मुद्दे को आगे बढ़ाने में उनके निरंतर नेतृत्व को आगे भी बने रहने की आशा व्यक्त की।

---

०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में पुनः निर्वाचित होने पर कांग्रेसी जिम मैकगवर्न को बधाई दी

०८ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बती लोगों की ओर से कांग्रेसी जिम मैकगवर्न को अमेरिकी प्रतिनिधि सभा में पुनः निर्वाचित होने पर पत्र लिखकर हार्दिक बधाई दी है।

अपने पत्र में सिक्योंग ने लिखा, 'कांग्रेस में आपकी निरंतर उपस्थिति न केवल आपके मतदाताओं के लिए बल्कि दुनिया भर में मानवाधिकारों और लोकतंत्र के पैरोकारों के लिए आशा की किरण बनी हुई है।'

पत्र में आगे लिखा गया है, 'समय-समय पर आपके नैतिक नेतृत्व और वैश्विक चुनौतियों के प्रति दृष्टिकोण ने एक शानदार उदाहरण स्थापित किया है कि कैसे निर्वाचित अधिकारी अंतरराष्ट्रीय मंच पर सार्थक बदलाव ला सकते हैं। तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए चीन को जवाबदेह ठहराने के आपके लगातार प्रयासों के साथ-साथ धार्मिक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए आपकी शक्तिशाली वकालत ने तिब्बती लोगों की आवाज़ और आकांक्षाओं को और मज़बूत किया है।'

यह स्वीकार करते हुए कि कांग्रेसी जिम मैकगवर्न का निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन तिब्बती मुद्दे के लिए अमूल्य है, पत्र में आगे लिखा गया है, 'तिब्बती लोग वास्तव में भाग्यशाली हैं कि उन्हें कांग्रेस में ऐसा समर्पित मित्र और समर्थक मिला है। इसलिए हम तिब्बत और दुनिया भर में उत्पीड़ित लोगों के मानवाधिकारों, सम्मान और स्वतंत्रता के मुद्दे को आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करना जारी रखने की आशा करते हैं।'

◆ ०५. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कलिम्पोंग में तिब्बती संस्थानों का दौरा किया, तिब्बत से संबंधित प्रमुख मुद्दों पर तिब्बतियों को संबोधित किया

११ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती बस्तियों की अपनी आधिकारिक यात्राओं के दौरान सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने ०८ नवंबर २०२४ को कलिम्पोंग तिब्बती बस्ती में तिब्बती प्रतिष्ठानों का दौरा किया।

सिक्योंग ने अपने दिन भर के कार्यक्रम की शुरुआत सेड-ग्युड मठ और झेकर चोएडे मठ के दौरे से की। इसके बाद संभूत तिब्बती स्कूल, कलिम्पोंग में अपना भाषण दिया।

स्कूल के प्रिंसिपल शेरिंग सोमो द्वारा एक संक्षिप्त परिचयात्मक संबोधन के बाद सिक्योंग ने छात्रों को तिब्बत के पिछले इतिहास और वर्तमान स्थिति के बारे में जानने की सलाह दी ताकि वे खुद को तिब्बत के मुद्दे से फिर से जोड़ सकें। इतना कहने के बाद सिक्योंग ने तिब्बती पठार की भू-राजनीतिक स्थिति और तिब्बत की नदी प्रणाली द्वारा निचले इलाके के इसके प्रभाव क्षेत्र में आनेवाले एशियाई समुदायों की आजीविका में निभाई जाने वाली प्रमुख भूमिकाओं के बारे में अपनी अंतर्दृष्टि के बारे में बताया। सिक्योंग ने आगे उन पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में बात की, जिन्होंने तिब्बती पठार के नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र को परेशान कर रखा है।

सिक्योंग द्वारा संबोधन समाप्त करने के बाद छात्रों के साथ एक प्रश्नोत्तर सत्र भी आयोजित किया गया। इसके बाद सिक्योंग ने गाडेन थारपा चोलिंग और शेचेन थिनले धारग्येलिंग मठ में पूजा-अर्चना की। इसी बीच उन्होंने मठ के संग्रहालय का भी दौरा किया।

इसके बाद दोपहर में सिक्योंग ने स्थानीय तिब्बती मेंत्सीखांग शाखा, स्थानीय तिब्बती वृद्धाश्रम और कलिम्पोंग तिब्बती ओपेरा एसोसिएशन का दौरा किया और फिर मणि लखांग में लगभग २०० तिब्बती निवासियों की सभा को संबोधित किया।

अपने संबोधन में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बती समुदाय के निर्वासन-यात्रा पर विचार किया, पुरानी पीढ़ी के प्रयासों पर प्रकाश डाला और विस्तार से बताया कि कैसे परम पावन दलाई लामा ने भारतीय प्रधानमंत्री नेहरू की सहायता से भारत में तिब्बती बस्तियों और स्कूलों की स्थापना की। उन्होंने यह भी चर्चा की कि कैसे परम पावन की १९६७ में एशिया और १९७३ में यूरोप की यात्राओं ने मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के विकास को जन्म दिया, जो तिब्बत के अस्तित्व और सांस्कृतिक संरक्षण, विशेष रूप से चीन की सांस्कृतिक क्रांति द्वारा किए गए विनाश के बाद की चिंताओं पर आधारित एक अवधारणा है।

सिक्योंग ने फिर मध्यम मार्ग के विकास यात्रा का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने १९७९ में अमेरिकी कांग्रेस के सामने परम पावन द्वारा पांच सूत्री शांति योजना की प्रस्तुति का उल्लेख करते हुए कहा कि इस विवरण को पूरा किया। इस योजना में चीन-तिब्बत संवाद पर जोर दिया गया था। १९८८ में परम पावन ने यूरोपीय संसद में अपने संबोधन के दौरान इस दृष्टिकोण को और स्पष्ट किया, जो तिब्बती निर्वासित समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गया। सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि मध्यम मार्ग दृष्टिकोण भविष्य के तिब्बत में परम पावन के दृष्टिकोण के साथ शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में समुदाय के प्रयासों का मार्गदर्शन करने वाला है।

सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने तिब्बतियों से अपने इतिहास को समझने और तिब्बत की गंभीर स्थिति के बारे में जानकारी रखने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि तिब्बत में बढ़ते चीनी प्रतिबंधों ने पारिवारिक रिश्तों को खराब कर दिया है और २००८ से निर्वासन में जाने वाले तिब्बतियों की संख्या में कमी आई है। इसका निर्वासित तिब्बती मठों और स्कूलों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उन्होंने कोरोना महामारी के बाद चीन की कमजोर आर्थिक स्थिति और बढ़ती युवा बेरोजगारी को देखते हुए व्यापक भू-राजनीतिक संदर्भ के बारे में भी चिंता व्यक्त की। हालांकि, यह तिब्बत के पक्ष में माहौल बनाने के लिए भी अवसर प्रस्तुत कर सकती है।

सिक्योंग ने तिब्बत की अंतरराष्ट्रीय अपील को मजबूत करने के लिए उग्यूर, दक्षिणी मंगोल, हांगकांग के कार्यकर्ता, चीनी लोकतंत्र समर्थक और ताइवान सहित वैश्विक सहयोगियों के साथ जुड़ने की १६वीं काशाग की रणनीति पर प्रकाश डाला। उन्होंने जोर देकर कहा कि अलग-थलग होकर तिब्बत के पक्ष में अभियान चलाना अप्रभावी है, जबकि संयुक्त मोर्चा अधिक वैश्विक ध्यान आकर्षित करता है। अंत में उन्होंने चेतावनी दी कि अपने इतिहास की गहरी समझ के बिना तिब्बतियों को अपनी सांस्कृतिक पहचान और परम पावन दलाई लामा के प्रयासों की विरासत को खो देने का खतरा है। उन्होंने समुदाय से भविष्य की पीढ़ियों के लिए इस ज्ञान को प्राथमिकता देने का आग्रह किया।

◆ ०६. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने गंगटोक में तिब्बतियों को संबोधित किया, इंटरनेट पर गलत सूचना से सतर्क रहने का आग्रह किया

१५ नवंबर, २०२४

गंगटोक। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने १० नवंबर २०२४ को भारत के पूर्वोत्तर में तिब्बती बस्तियों की अपनी आधिकारिक याल्रा के दूसरे चरण के अंतिम दिन सिक्किम की राजधानी गंगटोक में तिब्बती समुदाय को संबोधित किया।

पूर्वोत्तर के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी दोरजे रिग्जिन, गंगटोक तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी धोंडुप सांग्पो, कलिम्पोंग तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी शेटेन, गंगटोक स्थित सेरा जे ड्रोफेनलिंग मठ के महंत, स्थानीय तिब्बती सभा के अध्यक्ष जिन्पा, तिब्बती मुक्ति साधना के क्षेत्रीय अध्यक्ष सांगेय, तिब्बती युवा कांग्रेस के क्षेत्रीय अध्यक्ष लोबसांग वांग्याल और तिब्बती महिला संघ की क्षेत्रीय अध्यक्ष रिग्जिन डोल्मा के साथ-साथ स्थानीय तिब्बती सीएसओ के अन्य प्रतिनिधि गण इस सभा में उपस्थित थे।

कार्यक्रम की शुरुआत गंगटोक तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी के स्वागत भाषण से हुई। इसके बाद सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने निर्वासित तिब्बतियों के सामने मौजूदा राजनीतिक और सामाजिक माहौल पर टिप्पणी की। सिक्योंग ने सोशल मीडिया पर चीनी व्यापक प्रचार के बढ़ते प्रभाव पर प्रकाश डाला, जिसका उद्देश्य निर्वासित तिब्बती समुदाय के भीतर विभाजन पैदा करना है। विशेष रूप से परम पावन दलाई लामा और अन्य प्रमुख तिब्बती नेताओं को निशाना बनाना है। इसलिए, सिक्योंग ने जनता से आग्रह किया कि वे अपने सामने आने वाली सूचनाओं का गंभीरता से मूल्यांकन करें।

इसके अलावा, सिक्योंग ने दोहराया कि १६वें काशाग का काम परम पावन दलाई लामा के विशेष रूप से राजनीतिक, सामाजिक कल्याण और प्रशासनिक नीतियों के क्षेत्रों में दृष्टिकोण से निर्देशित है। उन्होंने कहा कि इस कार्यकाल के दौरान प्राप्त की गई हर उपलब्धि परम पावन की दया और आशीर्वाद के कारण है।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के गठन के बारे में बताते हुए सिक्योंग ने सभी तिब्बती क्षेत्रों और धार्मिक परंपराओं की इसमें समावेशिता पर जोर दिया तथा तिब्बत के साझा हित के लिए एकता का आग्रह किया। उन्होंने १६वें काशाग के नेतृत्व में शुरू की गई कई पहलों को भी रेखांकित किया, जिनमें डिजिटल संग्रह परियोजना, तिब्बती भाषा के संरक्षण में तीव्र प्रयास, आवास कार्यक्रम और संवर्धित सांख्यिकीय आंकड़ों के माध्यम से सार्वजनिक सेवाओं को बेहतर बनाने के प्रयास शामिल हैं।

समापन से पहले सिक्योंग ने निर्वासन में तिब्बतियों के सामने आने वाली चुनौतियों को संबोधित किया, जैसे कि बेहतर रोजगार के अवसरों की तलाश में बड़ी संख्या में युवा तिब्बती भारत और नेपाल से विदेश जा रहे हैं। इससे तिब्बती बस्तियों में रहने वाली आबादी में गिरावट आ रही है। उन्होंने कहा कि इस डोमिनोज़ प्रभाव का तिब्बती बस्तियों और स्कूलों की स्थिरता पर कई नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं।

अगले दिन सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने सिक्किम के माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग गोले के साथ सिक्किम में मिंड्रोलिंग ज़ंगडोकपालरी मंदिर के उद्घाटन समारोह में भाग लिया। इसमें केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और सुरक्षा मंत्री डोल्मा ग्यारी भी शामिल हुईं। इस कार्यक्रम के दौरान सिक्योंग ने तिब्बती भाषा में समारोह के लिए लिखे गए कशाग का बयान पढ़कर सुनाया।

---

०७. सिक्योंग की पुर्तगाल की पहली याल्रा परम पावन की पुर्तगाल याल्राओं का अनुसरण कर रही है

२३ नवंबर, २०२४

लिस्बन। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग की पुर्तगाल याल्रा, सीटीए के किसी निर्वाचित राजनीतिक प्रमुख की पहली ऐसी याल्रा है जो परम पावन दलाई लामा के पदचिन्हों पर चल रही है। परम पावन ने क्रमशः २००१ और २००७ में पुर्तगाल की याल्रा की थी। यह १६वें काशाग की पहले से अछूते राष्ट्रों के साथ राजनीतिक जुड़ाव के नए द्वार खोलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

अपनी याल्रा के दौरान सिक्योंग ने पुर्तगाली संसद के विभिन्न दलों के सदस्यों के साथ उच्चस्तरीय बैठकें कीं। इनमें सोशल डेमोक्रेट पार्टी के सांसद रेजिना बास्टोस और ब्रूनो वेंचुरा, लिवरे पार्टी के सांसद रुई तवारेस, पीपुल एनिमल्स नेचर पार्टी के सांसद डी सूसा रियल और लिबरल इनिशिएटिव पार्टी के सांसद रोड्रिगो सारावा शामिल रहे। याल्रा के दौरान, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के साथ तिब्बत और ब्रुसेल्स स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि रिग्जिन चोएडोन जेनखांग भी थे।

इन चर्चाओं में सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने यूरोपीय देशों, विशेष रूप से पुर्तगाल को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया। इसमें उन्होंने यूरोपीय संघ के बीजिंग से कम से कम खतरा लेने के दृष्टिकोण के आलोक में अपनी चीन नीतियों का पुनर्मूल्यांकन करने का आग्रह किया। यह विशेष महत्व रखता है क्योंकि पुर्तगाल ने हाल ही में भारी चीनी निवेश को आमंत्रित किया है। जबकि यूरोप देशों का व्यापक रुझान इसके विपरीत रहा है।

सिक्योंग ने कहा, 'चीन की बढ़ती आक्रामकता का मुकाबला करने का एकमात्र अहिंसक तरीका चीन के साथ व्यापार में कटौती करना है।' सिक्योंग का रुख यह है कि तिब्बती चीन के विकास के खिलाफ नहीं हैं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों की कीमत पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों में अपने अधिनायकवादी प्रवृत्ति को लागू करने में इसकी बढ़ती आक्रामकता को चुनौती देते हैं।

इस याल्रा का प्रभाव तुरंत स्पष्ट हो गया। इसके तुरंत बाद दो प्रसिद्ध पुर्तगाली मीडिया लूसा और एक्सप्रेसो ने बताया कि पुर्तगाल में चीनी दूतावास ने एक लिखित प्रतिक्रिया जारी की है। एक्सप्रेसो के साथ अपने साक्षात्कार में, सिक्योंग ने अपनी याल्रा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए

कहा, 'हम सरकारों से यह नहीं कह रहे हैं कि आप अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर कोई रुख अपनाएं। लेकिन कम से कम हमें जो कहना है उसे सुनें और यह पता लगाने की कोशिश करें कि यह सच है या नहीं। और अगर यह सच निकला तो हमें तय करना होगा कि इस दुनिया के लिए सबसे अच्छा क्या है- तानाशाहों के साथ खड़ा होना है या लोकतंत्रवादियों के साथ।'

लिस्बन में अपनी बैठकों के दौरान सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने बताया कि कैसे तिब्बत की दुर्दशा हर दिन बद से बदतर होती जा रही है। इसमें भावी पीढ़ियों के दिमाग से तिब्बती इतिहास को व्यवस्थित रूप से विस्मृत करने का चीनी अभियान और तिब्बती धार्मिक परंपराओं को चीनी परंपरा में विलीन कर लेना शामिल है। ये तत्व तिब्बती सांस्कृतिक पहचान के केंद्र में हैं।

छह दशकों से बढ़ते दमन के बावजूद उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कैसे तिब्बत के अंदर और निर्वासन में रह रहे तिब्बती परम पावन के मार्गदर्शन में अहिंसा और संवाद को अपनाना जारी रखते हैं।

पुर्तगाली सांसदों के साथ सिक्योंग की बैठकों के बाद लिबरल इनिशिएटिव पार्टी के सांसद रोड्रिगो सराइवा ने घोषणा की कि वह जल्द ही 'तिब्बती लोगों के मुद्दे और उनके आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करने के लिए संसदीय और औपचारिक प्रयासों' को जारी रखने के लिए एक मसौदा प्रस्ताव पेश करेंगे। यह पहल चीन द्वारा ११वें पंचेन लामा के अपहरण की २९वीं वर्षगांठ के संबंध में विदेश मामलों की समिति में पार्टी के मई २०२३ के चिंता व्यक्त किए जाने के बाद की गई है।

मीडिया से संवाद करने के अपने कार्यक्रम के तहत सिक्योंग ने लुसो और एक्सप्रेसो दोनों के साथ विशेष रूप से बात की। लिस्बन में सिक्योंग का स्वागत अमेरिकी चार्ज डी'एफ़ेयर डगलस कोनीफ़ ने किया, जिन्होंने १४ नवंबर को अमेरिकी दूतावास में उनकी मेजबानी की थी। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता आयोग के अध्यक्ष और पूर्व न्याय मंत्री डॉ. वेरा जार्डिम के साथ भी विचार-विमर्श किया, जो पहले परम पावन की २००१ और २००७ में पुर्तगाल की यात्राओं के दौरान उनसे भी मिले थे।

सिक्योंग ने पोर्टो में स्थित सामाजिक और राजनीतिक टिप्पणीकारों, प्रोफेसर पाउलो मोरिस और डॉ. बटाला के साथ भी बातचीत की। प्रोफेसर मोरिस २००१ और २००७ में परम पावन दलाई लामा की पुर्तगाल यात्राओं के आयोजन में सक्रिय रूप से शामिल रहे थे।

◆ ०८. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने भारतीय सांसदों- ए.डी. सिंह और श्री दरोगा प्रसाद सरोज से मुलाकात की

११ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने ०८ नवंबर २०२४ को दिल्ली में राष्ट्रीय जनता दल के राज्यसभा सदस्य श्री ए.डी. सिंह और समाजवादी पार्टी से लोकसभा सदस्य श्री दरोगा प्रसाद सरोज से शिष्टाचार भेंट की।

बैठकों के दौरान स्पीकर ने उन्हें तिब्बत की गंभीर स्थिति से अवगत कराया। इनमें चीन के औपनिवेशिक बोर्डिंग स्कूल और तिब्बती स्कूलों को जबरन बंद करना शामिल है, जिसका उद्देश्य तिब्बत की पहचान को मिटाना है।

स्पीकर ने सांसदों से संसद में तिब्बत के मुद्दे को उठाने और तिब्बत के मुद्दे का समर्थन करने का आग्रह किया, जिस पर दोनों सांसदों ने अपना निरंतर समर्थन देने का आश्वासन दिया।

स्पीकर ने तिब्बत के मुद्दे और तिब्बती लोगों के समर्थन के लिए भारत सरकार और भारत के लोगों के प्रति आभार भी व्यक्त किया।

भारत तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की कार्यकारी समन्वयक ताशी देकि इन बैठकों के दौरान स्पीकर के साथ थीं।

◆ ०९. स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने सिक्किम के तुमलोंग में माइंडरोलिंग जांग-डोक-पलरी मंदिर के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया

१२ नवंबर, २०२४, तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

धर्मशाला। निर्वासित तिब्बती संसद के स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने ०१ नवंबर २०२४ को उत्तरी सिक्किम के तुमलोंग में माइंडरोलिंग जांग-डोक-पलरी मंदिर के उद्घाटन समारोह में भाग लिया और उसे संबोधित किया।

समारोह में कई प्रतिष्ठित रिनपोछे मौजूद रहे। इनमें क्याब्जे मिनलिंग खेंचेन रिनपोछे, क्याब्जे खोछेन रिनपोछे, जेसुन खांड्रो रिनपोछे, पेनम रिनपोछे के साथ ही सिक्किम के मुख्यमंत्री श्री प्रेम सिंह तमांग-गोले, स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, सुरक्षा कालोन (मंत्री) ग्यारी डोल्मा, सांसद खेन्पो जम्पेल तेनज़िन और सिक्किम सरकार के धार्मिक मामलों के मंत्री सोनम लामा जैसे गणमान्य व्यक्ति शामिल थे। इस धार्मिक समारोह के दौरान मिनलिंग त्से-चू चेमो चाम नामक एक विशेष अनुष्ठानिक नृत्य किया गया।

अपने संबोधन में स्पीकर ने अपनी शुभकामनाएं दीं और मिंड्रोलिंग जांग-डोक-पलरी की स्थापना की धार्मिक वृत्ति पर प्रकाश डाला। इस दौरान उन्होंने उत्कृष्टता के पांच प्रमुख पहलुओं- शिक्षक, स्थान, शिक्षण, समय और अनुचर- पर जोर दिया।

सिक्किम में स्थित इस मंदिर को बेयुल के नाम से भी जाना जाता है। यह स्थान गुरु पद्मसंभव से आशीर्वाद प्राप्त भूमि है। इस मंदिर की स्थापना गुरु पद्मसंभव के ज्ञान को धारण करने वाले महान गुरुओं की उपस्थिति में की गई थी। इसमें गुरु त्सेन-ग्ये के गरचम की उत्कृष्ट शिक्षाओं को स्थान दिया गया। यह पवित्र स्थान त्से-चू के शुभ

मुहूर्त और सिक्किम में गुरु पद्मसंभव के अनुयायियों के असाधारण दल की उपस्थिति के लिए भी जाना जाता है।

स्पीकर ने इस उल्लेखनीय उपलब्धि का श्रेय क्याब्जे खोछेन रिनपोछे को दिया और रिनपोछे तथा उन उदार लाभार्थियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया, जिन्होंने अपना योगदान देकर मंदिर की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने मंदिर को सभी बौद्धों के लिए पुण्य और लाभ का स्रोत बताया।

सिक्किम में बौद्ध धर्म के प्रसार पर अपनी टिप्पणी में स्पीकर ने इस बात पर जोर दिया कि आठवीं शताब्दी में तिब्बत की यात्रा के दौरान गुरु पद्मसंभव ने सिक्किम को आशीर्वाद दिया था, जिसके कारण इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का विकास हुआ। उन्होंने कहा कि सिक्किम को गुरु पद्मसंभव का आशीर्वाद प्राप्त बेयूल या छिपी हुई भूमियों में से एक माना जाता है।

आगे स्पीकर ने तिब्बत पर चीनी कब्जे के बाद की स्थिति पर अपना विचार रखा। उन्होंने याद किया कि कैसे परम पावन दलाई लामा ८०,००० से अधिक तिब्बतियों को भारत में निर्वासन में लेकर आए, जिनमें से हजारों सिक्किम में बस गए। उन्होंने तिब्बत और सिक्किम के लोगों के बीच साझा धर्म और संस्कृति के माध्यम से बने गहरे संबंधों पर प्रकाश डाला और राज्य में रह रहे तिब्बती शरणार्थियों के प्रति अटूट समर्थन के लिए सिक्किम सरकार और लोगों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की।

स्पीकर ने अपने संबोधन का समापन परम पावन दलाई लामा, क्याब्जे मिनलिंग खेंचेन रिनपोछे, क्याब्जे खोछेन रिनपोछे, जेत्सुन खांड्रो रिनपोछे, पेनम रिनपोछे और अन्य महान गुरुओं की लंबी आयु और उनकी महान आकांक्षाओं की शीघ्र पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हुए किया। उन्होंने चीन-तिब्बती संघर्ष के शीघ्र समाधान के लिए भी प्रार्थना की।

◆ १०. डिप्टी स्पीकर ने क्यब्जे समदोंग रिनपोछे के ८५वें जन्मदिवस समारोह में तिब्बत के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डाला

०७ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। तिब्बती कला प्रदर्शन संस्थान (टीपा) में ०५ नवंबर २०२४ को क्याब्जे कालोन त्रिसूर समदोंग रिनपोछे की ८५वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम का आयोजन ल्हा चैरिटेबल ट्रस्ट ने किया था।

निर्वासित तिब्बती संसद की डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने मुख्य अतिथि के तौर पर, एलटीडब्ल्यूए के निदेशक गेशे लखदोर ने विशिष्ट अतिथि के तौर पर तथा पूर्व सांसद सोनम ग्यालत्सेन ने विशेष अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में अपने विचार रखे। समारोह में रिनपोछे की तिब्बत के लिए आजीवन सेवा के प्रति गहरा आभार व्यक्त किया गया।

डिप्टी स्पीकर ने पूर्व कालोन त्रिपा क्याब्जे समदोंग रिनपोछे को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा उनके दीर्घायु होने की कामना की। उन्होंने दुनिया भर में तिब्बतियों द्वारा रिनपोछे के जन्मदिन के स्वैच्छिक समारोह की प्रशंसा की, जो तिब्बत के लिए उनके आजीवन समर्पण को दर्शाता है।

डिप्टी स्पीकर ने रिनपोछे के साथ अपनी पहली मुलाकात को भी याद किया जब तिब्बतियों के लिए बाल सभा (छात्रों की सभा) पहली बार डलहौजी स्थित केंद्रीय विद्यालय में शुरू की गई थी। यहां उन्होंने प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया था। बाद में बाल सभा की स्थापना पचमारी स्कूल में की गई, जहां डिप्टी स्पीकर एक छात्र के रूप में उपस्थित थीं। उन्हें सभा में भाग लेने का अवसर मिला, जिसने समुदाय की सेवा करने के लिए उनकी प्रारंभिक प्रेरणा को प्रज्वलित किया और उन्हें निर्धारित पाठ्यक्रम से बाहर जाकर जिम्मेदारियां लेने का महत्व सिखाया।

क्याब्जे समदोंग रिनपोछे ने बाद में वाराणसी स्थित केंद्रीय उच्च तिब्बती अध्ययन संस्थान के प्रिंसिपल के रूप में कार्य किया, जहां संस्थान के कुछ शिक्षकों द्वारा उनके मार्गदर्शन में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन में स्वैच्छिक योगदान को प्रोत्साहित करने के लिए सार्वजनिक आंदोलन की शुरुआत हुई। इस आंदोलन का गहरा प्रभाव पड़ा, जिसने दुनिया भर के तिब्बतियों को प्रभावित किया और तिब्बती लोगों के प्रामाणिक प्रतिनिधि के रूप में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की मान्यता को मजबूत कर दिया।

परम पावन दलाई लामा द्वारा तिब्बती लोगों को लोकतंत्र के उपहार और तिब्बती आंदोलन को अहिंसक दृष्टिकोण की ओर ले जाने में उनके मार्गदर्शन के बारे में चर्चा करते हुए डिप्टी स्पीकर ने तिब्बती लोकतंत्र के जमीनी स्तर पर कामकाज में क्याब्जे समदोंग रिनपोछे के अमूल्य योगदान पर जोर दिया।

इसकी शुरुआत १९९० में चार्टर मसौदा समिति (ड्राफ्टिंग कमेटी) के सदस्य के रूप में उनकी भूमिका से हुई, जहां उन्होंने आधारभूत दस्तावेज को आकार देने में मदद की। रिनपोछे ने दस साल तक निर्वासित तिब्बती संसद के अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) को अन्य लोकतांत्रिक प्रणालियों के बराबर एक नियम-आधारित सरकार की ओर ले जाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

तिब्बती लोकतंत्र के विकास में ऐतिहासिक मील का पत्थर साबित हुए क्याब्जे समदोंग रिनपोछे २००१ में भारी बहुमत से पहले कालोन ट्रिपा चुने गए। उनका नेतृत्व सत्य, अहिंसा और एक वास्तविक लोकतांत्रिक व्यवस्था के प्रति गहन प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित था।

डिप्टी स्पीकर ने रिनपोछे के मध्यम मार्ग दृष्टिकोण (एमडब्ल्यूए) में गहरी अंतर्दृष्टि पर प्रकाश डाला। मध्यम मार्ग दृष्टिकोण केंद्रीय तिब्बती प्रशासन का आधिकारिक रुख है, जिसे परम पावन दलाई लामा ने पेश किया और निर्वासित तिब्बती संसद ने सर्वसम्मति से इसे अंगीकार किया है। रिनपोछे के नेतृत्व के प्रमुख पहलुओं के रूप में उनकी बुद्धिवादी सोच के साथ ही आलोचना से निपटने के लिए उनके व्यावहारिक और दयालु दृष्टिकोण पर बल दिया गया।

डिप्टी स्पीकर ने रिनपोछे के अमूल्य योगदान पर प्रकाश डाला, जिसमें केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कार्यालयों के पंजीकरण में उनकी भूमिका और तिब्बती शिक्षा नीति पर उनके प्रभाव सहित कई अन्य कार्य शामिल हैं।

अंत में डिप्टी स्पीकर ने उपस्थित लोगों को तिब्बती मुद्दे के प्रति उनके आजीवन समर्पण के लिए श्रद्धांजलि के रूप में अपने दैनिक जीवन में दया और अहिंसा पर रिनपोछे की शिक्षाओं को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने सभी से तिब्बत के सामान्य उद्देश्य में व्यक्तिगत रूप से योगदान देने का भी आग्रह किया।

कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों की बातचीत का कार्यक्रम भी शामिल किया गया था।

◆ ११. डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने 'ऑस्ट्रेलिया-तिब्बत परिषद' के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की, तिब्बत मुद्दे के समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया

०८ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। ऑस्ट्रेलिया-तिब्बत परिषद (एटीसी) के 'लिटिल तिब्बत' दौरा कार्यक्रम के तहत एटीसी के कार्यकारी निदेशक डॉ. ज़ोए बेडफोर्ड के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने आज, ०८ नवंबर को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की।

डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने एटीसी प्रतिनिधिमंडल का स्वागत और गर्मजोशी से अभिवादन करते हुए तिब्बतियों और ऑस्ट्रेलियावासियों के बीच के विशेष संबंधों पर जोर दिया। उन्होंने पिछले दशकों में तिब्बत के लिए की गई अटूट वकालत के लिए एटीसी की प्रशंसा की और उनके निरंतर समर्थन के लिए गहरा आभार व्यक्त किया।

डिप्टी स्पीकर ने प्रतिनिधिमंडल को निर्वासित तिब्बती संसद की संरचना और गठन, इसके सांसदों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों और उन्हें चुनने की चुनाव प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी। डिप्टी स्पीकर ने प्रतिनिधिमंडल को धर्मशाला लाने के लिए एटीसी को धन्यवाद दिया तथा कहा कि चीन-तिब्बत संघर्ष के बारे में जानने तथा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के काम को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव करने से तिब्बत के न्यायोचित मुद्दे के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और मजबूत होगी।

तिब्बत के बारे में जागरुकता फैलाने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डिप्टी स्पीकर ने चीन के दुष्प्रचार अभियानों का मुकाबला करने की चुनौती का जवाब देने पर जोर दिया। उन्होंने चीन की विस्तारवादी मानसिकता की निंदा की और इसे वैश्विक लोकतंत्र के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक बताया। उन्होंने तिब्बतियों के लिए निष्पक्षता और न्याय सुनिश्चित करने वाली लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए परम पावन दलाई लामा के लंबे समय से आकांक्षी मध्यम मार्ग दृष्टिकोण के साथ-साथ तिब्बती लोगों को उनके द्वारा दिए लोकतंत्र रूपी उपहार के बारे में भी बात की।

डिप्टी स्पीकर ने तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति की ओर भी ध्यान आकर्षित किया, जिसमें तिब्बती बच्चों को औपनिवेशिक शैली के बोर्डिंग स्कूलों में जबरन स्थानांतरित करना और विरोध स्वरूप तिब्बतियों द्वारा आत्मदाह करना शामिल है। उन्होंने २२ अक्तूबर २०२४ को राष्ट्रों के एक समूह की ओर से संयुक्त वक्तव्य जारी करने के लिए संयुक्त राष्ट्र में ऑस्ट्रेलियाई राजदूत के प्रति आभार व्यक्त किया। इस वक्तव्य के जारी होने के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा में तिब्बत के मुद्दे को उठाया गया और संयुक्त राष्ट्र की वैध चिंताओं को दूर करने से चीन के इनकार की निंदा की गई।

यात्रा के समापन पर प्रतिनिधिमंडल को पारंपरिक तिब्बती औपचारिक स्कार्फ और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्हें संसद भवन के दौरे पर ले जाया गया।

◆ १२. स्पीकर के नेतृत्व में ब्रिटिश संसद के दौरे पर तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल

२० नवंबर, २०२४

लंदन। स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल के नेतृत्व में निर्वासित तिब्बती संसद (टीपीआईई) के एक प्रतिनिधिमंडल ने १८ नवंबर २०२४ को यूनाइटेड किंगडम के संसद भवन के दौरे के साथ ब्रिटेन की अपनी आधिकारिक यात्रा शुरू की।

अपने कार्यक्रम के तहत प्रतिनिधिमंडल ने हाउस ऑफ कॉमंस की लोक लेखा समिति (पीएसी) के अध्यक्ष कंजर्वेटिव पार्टी के सांसद सर जेफ्री क्लिफ्टन ब्राउन से मुलाकात की। यह बैठक संस्थागत संरचनाओं, प्रक्रियात्मक रूपरेखाओं और पीएसी और टीपीआईई दोनों की कार्यप्रणाली की जानकारी को गहराई से आदान-प्रदान में एक मंच के रूप में उपयोगी साबित हुई। प्रतिनिधिमंडल को चल रहे पीएसी सत्र का अवलोकन करने का अनूठा अवसर भी मिला, जिससे उन्हें ब्रिटेन की संसद के भीतर संसद संचालन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के बारे में मूल्यवान जानकारी मिली।

बाद में प्रतिनिधिमंडल ने अन्य प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों के साथ सार्थक बातचीत की। ये चर्चाएं हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स की भूमिका और जिम्मेदारी, इसकी संस्थागत संरचना और विधायी कार्य प्रणाली के बारे में अपनी समझ को व्यापक बनाने पर केंद्रित थीं। उन्होंने हाउस ऑफ़ लॉर्ड्स के भीतर संसद सदस्यों के कर्तव्यों और दायित्वों के बारे में भी जानकारी हासिल की और ब्रिटिश और निर्वासित तिब्बती संसद के बीच विधायी प्रथाओं और शासन मॉडल पर गहनता से तुलनात्मक चर्चा की।

इसके अतिरिक्त, प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत के अंदर मानवाधिकारों के उल्लंघन के ज्वलंत मुद्दे को उठाने के लिए इस महत्वपूर्ण मंच का उपयोग किया। उन्होंने चीनी कब्जे के तहत तिब्बतियों के सामने आने वाली

चुनौतियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इसमें सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई स्वतंत्रता का दमन को रोकने के साथ ही अंतरराष्ट्रीय ध्यान और समर्थन दिए जाने की सख्त आवश्यकता है। इस दौरे से महत्वपूर्ण मानवाधिकार परिप्रेक्ष्य को चर्चा में लाने में मदद मिली, जिसने इस मुद्दे से निपटने के लिए वैश्विक संस्थानों की साझा जिम्मेदारी पर जोर दिया।

यह दौरा संस्थागत विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें निर्वासित तिब्बती संसद की प्रभावशीलता, पारदर्शिता और समावेशिता को बढ़ाने की क्षमता थी, साथ ही तिब्बत के लिए इसके वैश्विक पक्षधरता अभियान के प्रयासों को मजबूत किया जा सकता है।

यह आधिकारिक यात्रा यूएसएआईडी द्वारा कार्यान्वित की गई है और प्रतिनिधिमंडल के साथ एनडीआई और यूएसएआईडी के कर्मचारियों के साथ-साथ निर्वासित तिब्बती संसद के संसदीय सचिवालय के एक कार्यक्रम अधिकारी भी इस यात्रा में शामिल रहे।

◆ १३. तिब्बती सांसदों ने १०५वें गदेन त्रिपा के पट्टाभिषेक समारोह में भाग लिया

२८ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। गत २६ नवंबर २०२४ को १०५वें गदेन त्रिपा, शारपा चोएजे रिनपोछे जेट्सन लोबसंग दोरजी पेलसंगपो का पट्टाभिषेक समारोह गदेन लाची में आयोजित किया गया। इसके बाद २७ नवंबर २०२४ को गदेन त्रिटोक खांग में १०५वें गदेन त्रिपा जेट्सन लोबसंग दोरजी पेलसंगपो और १०४वें गदेन त्रिपा जेट्सन लोबसंग तेनजिन पेलसंगपो दोनों के लिए दीर्घायु प्रार्थना की गई। दीर्घायु प्रार्थनाओं का आयोजन अंतरराष्ट्रीय गेलुग फाउंडेशन, उत्तरी अमेरिका गेलुग मोनलम समिति और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

सांसद गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसंग फेंडे ने २८ नवंबर २०२४ को आधिकारिक तौर पर ड्रेपुंग खेमांग लोसेलिंग मठ में १०५वें गदेन त्रिपा के पट्टाभिषेक समारोह में भाग लिया। इस समारोह में गेशे ल्हारम्पा अटुक शेटेन, लोपोन थुप्टेन ग्यालत्सेन, खेंपो कडा नेगेडुप सोनम, कोंचोक यांगफेल और चोफेल थुप्टेन सहित अन्य सांसदों ने भी भाग लिया।

समारोह में मठों के पीठों के खेंपोस (महंत), केंद्रीय तिब्बती निर्वासित संसद के सिक्योंग पेन्पा शेरिंग, परम पावन दलाई लामा के कार्यालय के सचिव यांगटेन रिनपोछे और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। पट्टाभिषेक संपन्न होने के बाद सांसद गेशे ल्हारम्पा अटुक शेतेन और सांसद गेशे ल्हारम्पा गोवो लोबसंग फेंदे को १०४वें गदेन त्रिपा, गदेन त्रिसूर से मुलाकात का अवसर मिला और गदेन त्रिसूर के सेरा मठ के लिए प्रस्थान करने से पहले उन्होंने उनके प्रति अपना सम्मान प्रकट किया। मुलाकात के दौरान दोनों सांसदों ने धर्म, विशेष रूप से गेलुग्पा परंपरा के प्रति समर्पित सेवा के लिए रिनपोछे के समक्ष श्रद्धवनत हुए और अपनी गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना की।

बाद में सांसदों को सरमे खेन रिनपोछे से मुलाकात कराइ गई, जिसके दौरान उन्होंने उनका आशीर्वाद मांगा। बैठक के दौरान सरमे खेन रिनपोछे ने सांसदों को परम पावन दलाई लामा की शिक्षाओं का पालन करने और उनके मार्गदर्शन में तिब्बत के वृहत्तर हित में ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करने की सलाह दी।

१४. सीआरओ शावांग फुंट्सोक के नेतृत्व में तिब्बती प्रतिनिधिमंडल ने लीज नवीकरण मुद्दे पर चर्चा करने के लिए माननीय मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से मुलाकात की

०७ नवंबर, २०२४, मुख्य प्रतिनिधि कार्यालय, शिमला द्वारा तैयार रिपोर्ट

शिमला। शिमला के मुख्य प्रतिनिधि अधिकारी (सीआरओ) शावांग फुंट्सोक और कार्यालय सचिव तेनजिन पाल्डेन ने सांग्ये चोलिंग तिब्बती बौद्ध संघ के कार्य समिति के सदस्यों- भिक्षु शाक्य, कर्मा फुंट्सोक और पाल्डेन धोंडुप के साथ हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू से ०६ नवंबर २०२४ को शाम करीब ६:३० बजे उनके आवास पर मुलाकात की।

बैठक के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने एसोसिएशन के लंबित लीज नवीकरण मामले के बारे में मुख्यमंत्री को जानकारी दी। इसके अतिरिक्त, सीआरओ ने फुंटसोक्लिंग तिब्बती बस्ती, डलहौजी में पिछले एक दशक से अधिक समय से लंबित इस मामले में तेजी लाने का अनुरोध किया। मुख्यमंत्री ने प्रतिनिधिमंडल को आश्वासन दिया कि वह इस मुद्दे पर गौर करेंगे।

१५. जर्मनी में यूरोप-तिब्बत एडवोकेसी: तिब्बती सांसदों ने जर्मन सांसदों के साथ तिब्बत में गंभीर स्थिति पर चर्चा की

०७ नवंबर, २०२४

बर्लिन। बर्लिन यात्रा के अंतिम दिन तिब्बती सांसदों- यूडन औकात्सांग और शेरिंग ल्हामो ने जर्मन बुंडेस्टाग के पॉल-लोबे-हॉस के समिति कक्ष में तिब्बत पर एक प्रस्तुति दी। इस कार्यक्रम का आयोजन जर्मन-तिब्बतन पालिर्यामेंटरी ग्रुप फॉर तिब्बत (तिब्बत के लिए जर्मन तिब्बती संसदीय समूह)' के अध्यक्ष सांसद माइकल ब्रांड ने किया था।

बैठक में सीडीयू पार्टी के सांसद माइकल ब्रांड और चीन पर अंतरसंसदीय गठबंधन के सह-अध्यक्ष, मानवाधिकार और मानवीय सहायता पर एफडीपी पार्टी के प्रवक्ता सांसद पीटर हेइड्ट, स्वास्थ्य नीति पर ग्रीन पार्टी के प्रवक्ता सांसद मारिया क्लेन-श्मींक और विदेश नीति पर एफडीपी

कार्य समूह के सदस्य सांसद फ्रैंक मुलर मौजूद रहे।

जेनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय में संयुक्त राष्ट्र में एडवोकेसी अधिकारी फुंटसोक टॉपग्याल और जर्मनी में तिब्बती समुदाय के अध्यक्ष डंडुप डोनका के अलावा आईसीटी जर्मनी के निदेशक काई मुलर और 'तिब्बतन इनिशिएटिव ड्यूशलैंड' के डेविड मिसल जर्मन बुंडेस्टैग में इस प्रस्तुति कार्यक्रम में हमारे साथ शामिल हुए।

दोनों तिब्बती सांसदों ने तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर संक्षिप्त प्रस्तुति दी। इसमें तिब्बती पहचान, संस्कृति और धर्म को मिटाने के उद्देश्य से चीन की संहारक नीतियों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस दौरान सरकार नियंत्रित आवासीय स्कूलों को चलाने, तिब्बती निजी स्कूलों और मठों के स्कूलों को बंद करने और विकास के नाम पर मठों को ध्वस्त करने पर विशेष चिंता व्यक्त की गई।

इस कार्यक्रम में जर्मन सांसदों से विशेष अपील की गई कि वे जर्मन संसद में, विशेष रूप से परम पावन दलाई लामा की ९०वीं जयंती के अवसर पर एक घोषणा पारित करें, जिसमें परम पावन दलाई लामा को ही उनके अपने पुनर्जन्म को निर्धारित करने के अधिकार का समर्थन किया गया हो। तिब्बती सांसदों ने दोहराया कि इससे चीनी सरकार को तिब्बती लोगों के धार्मिक क्षेत्र में हस्तक्षेप न करने का एक मजबूत संकेत मिलेगा।

जर्मन सांसदों से तिब्बत के प्रति अपनी एकजुटता दिखाने के लिए धर्मशाला आने का आग्रह करने पर सांसदों में से एक ने २०२५ की शुरुआत में धर्मशाला आने की अपनी इच्छा व्यक्त की। प्रस्तुति के बाद तिब्बती सांसदों को सांसद माइकल ब्रैंड और उनके कर्मचारियों के सौजन्य से जर्मन संसद के एक घंटे के दौरे पर ले जाया गया। उसी शाम तिब्बती सांसद प्राग के लिए रवाना हो गए।

◆ १६. तिब्बती प्रतिनिधियों ने 'कॉप-२९ संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन' के पहले दिन डेरगे बांध की चिंताओं को उजागर किया

११ नवंबर, २०२४, तिब्बती नीति संस्थान, सीटीए की रिपोर्ट

बाकू (अजरबैजान), १० नवंबर २०२४। आज १० नवंबर से बाकू में शुरू कॉप- २९ वैश्विक जलवायु शिखर सम्मेलन में तिब्बती प्रतिनिधियों- देचेन पाल्मो और धोंडुप वांगमो ने तिब्बत में पर्यावरण संबंधी चिंताओं पर बहुत जरूरी ध्यान आकृष्ट किया। क्षेत्र के हितों की ओर ध्यान दिलाते हुए उन्होंने डेरगे बांध परियोजना के संभावित पारिस्थितिकीय प्रभावों पर प्रकाश डाला। यह परियोजना एक जलविद्युत पहल है जो ड्रिचू नदी की धारा को बदलने और इसके पानी पर निर्भर निचले देशों के समुदायों को प्रभावित करने वाला है।

कॉप-२९ के पहले दिन तिब्बती पर्यावरण शोधकर्ता डेचेन पाल्मो और धोंडुप वांगमो ने डेरगे बांध परियोजना द्वारा उत्पन्न पर्यावरणीय और सांस्कृतिक चुनौतियों के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लिए एक अभियान शुरू किया। उन्होंने उपस्थित लोगों, सरकारी प्रतिनिधियों और पर्यावरण संगठनों को 'तिब्बत में डेरगे बांध परियोजना को न कहें: ड्रिचू नदी, समुदाय और विरासत को विनाश से बचाएं' शीर्षक से एक विवरणिका (ब्रोशर) वितरित किया।

ब्रोशर ड्रिचू नदी पर बांध के संभावित प्रभावों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है, जो न केवल पारिस्थितिकीय महत्व का है, बल्कि तिब्बत में स्थानीय समुदायों के लिए सांस्कृतिक महत्व का भी है। देचेन ने बताया, 'हमारा लक्ष्य ड्रिचू नदी के संरक्षण के लिए समर्थन जुटाना और तिब्बत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विरासत को होने वाले अपूरणीय नुकसान को रोकना है'।

कॉप-२९ में देचेन पाल्मो और धोंडुप वांगमो की कार्यसूची में सरकारी बैठकों, कार्यक्रम से इतर होनेवाली बातचीत में भागीदारी और सरकारी कार्यालयों और विभिन्न देशों के मंडपों का दौरा शामिल है। अभियान में प्रतिनिधियों ने तिब्बत के कमजोर पारिस्थितिकीय तंत्र के बारे में जागरुकता बढ़ाने और तिब्बती पठार पर बढ़ती जलविद्युत परियोजनाओं के दुष्प्रभावों से तत्काल निपटने पर जोर दिया।

धोंडुप वांगमो ने कहा, 'डेरगे बांध परियोजना सिर्फ स्थानीय मुद्दा नहीं है, बल्कि यह क्षेत्रीय जल सुरक्षा और जैव विविधता को प्रभावित करने वाले व्यापक पैटर्न का हिस्सा है। हम यहां स्थायी दृष्टिकोण के पक्ष में मत तैयार करने के लिए आए हैं जो तिब्बत के अद्वितीय पर्यावरण और उस पर निर्भर लोगों, दोनों का सम्मान करते हों।'

विभिन्न देशों के मंडपों और सरकारी कार्यालयों में आयोजित विभिन्न चर्चाओं में भाग लेकर तिब्बती प्रतिनिधिमंडल का उद्देश्य तिब्बत की नदियों और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा करने वाली नीतियों के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन को बढ़ावा देना है। डेरगे बांध को अपनी पक्षधरता अभियान के केंद्र में रखते हुए कॉप- २९ में प्रतिनिधियों की उपस्थिति एक महत्वपूर्ण जल स्रोत और जलवायु लचीलेपन के संघर्ष में अग्रिम पंक्ति क्षेत्र के रूप में तिब्बत की भूमिका को रेखांकित करती है।

इस आलेख और कॉप-२९ के साइड इवेंट्स और मंडपों में चर्चाओं के माध्यम से पाल्मो और वांगमो तिब्बत के पर्यावरण और इसके महत्वपूर्ण जल स्रोतों की सुरक्षा के लिए स्थायी विकल्पों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के पक्ष में माहौल तैयार कर रहे हैं।

◆ १७. इटली के दानदाताओं ने बाइलाकुप्पे में लुगसुंग समदुप्लिंग तिब्बती बस्ती का दौरा किया

११ नवंबर, २०२४, टीएसओ लुगसुंग समदुप्लिंग की रिपोर्ट

बाइलाकुप्पे। इटली के विमला एसोसिएशन, यूबीआई और विसेदाना फाउंडेशन के एक समूह ने ०४ से ०९ नवंबर तक कर्नाटक के बाइलाकुप्पे में लुगसुंग तिब्बती बस्ती का दौरा किया। समूह ने पिछले

साल की पूरी हो चुकी परियोजनाओं की निगरानी की और बस्ती की नई परियोजनाओं की जरूरतों का आकलन किया।

इससे पहले, उन्होंने आर्थिक रूप से वंचित निवासियों के लिए आवास, कैंप नंबर ०७ में दुकानों, रेस्तरां और शौचालय की सुविधाओं का निर्माण, एक बहुउद्देशीय हॉल का निर्माण और शौचालय का नवीकरण और एसटीएस गुएलाधला के लिए पेंटिंग और छत जैसी परियोजनाओं के लिए धनराशि प्रदान की।

इस समूह में विमला एसोसिएशन की अध्यक्ष डेबी कैरानी, यूनियन बिधिस्ता इटालियाना (यूबीआई) के अध्यक्ष फिलिपो स्कियाना और विसेदाना फाउंडेशन की जनरल डायरेक्टर एनरिका लोबिना के नेतृत्व में तीन अलग-अलग एसोसिएशन और फाउंडेशन के कुल ३० सदस्य शामिल थे। समूह ने लुगसम सामदुप्लिंग तिब्बती बस्ती में बस्ती कार्यालयों, मठ संस्थानों, स्कूलों, अस्पतालों और वृद्धाश्रमों का दौरा किया।

विसेदाना फाउंडेशन ने बस्ती अधिकारियों के साथ बीबीसीसी परियोजना पर भी चर्चा की और परियोजना के लिए व्यवस्थित स्थल का दौरा किया।

०९ नवंबर की शाम को गणमान्य व्यक्तियों और मेहमानों के लिए लुगसम, टीडीएल, टीडीएल की तिब्बती सहकारी सोसायटी, एसओएस टीसीवी बायलाकुप्पे और सोजे अस्पताल के कार्यालयों द्वारा उनके सम्मान में एक रात्रिभोज का स्वागत समारोह संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। रात्रिभोज के दौरान अतिथियों को बस्ती के लिए उनके उदार वित्तपोषण और समर्थन के लिए आभार और प्रशंसा व्यक्त करने के लिए स्मृति चिन्ह भी भेंट किए गए।

◆ १८. पटना में 'तिब्बत मुक्ति साधना और भारत-चीन संबंध' पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित

२० नवंबर २०२४, भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, डीआईआईआर, सीटीए की रिपोर्ट

पटना। 'तिब्बत मुक्ति साधना और भारत-चीन संबंध' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी १७ नवंबर २०२४ को पटना में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। इसका आयोजन भारत-तिब्बत मैत्री संघ (आईटीएफएस) बिहार और जगजीवन राम संसदीय अध्ययन और राजनीतिक शोध संस्थान द्वारा केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था। संगोष्ठी में पूरे क्षेत्र से गणमान्य व्यक्तियों, विद्वानों और युवाओं ने शिरकत की।

मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन सत्र की शुरुआत की। इस अवसर पर भारतीय और तिब्बती राष्ट्रगान गाए गए, जिससे सेमिनार में गंभीर और देशभक्ति का माहौल तैयार हो गया। मंच पर तिब्बती राष्ट्रगान के गायन का नेतृत्व आईटीसीओ ने किया। केंद्रीय तिब्बत प्रशासन (सीटीए) की ओर से तिब्बती सांसद ने मुख्य अतिथि और अन्य गणमान्य हस्तियों को खटक और परम पावन १४वें दलाई लामा द्वारा लिखित आत्मकथा का हिन्दी संस्करण 'मेरा देश और मेरा देशवासी' भेंट किया गया।

सेमिनार का उद्घाटन एक प्रतिष्ठित पैनल द्वारा किया गया, जिसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री और वर्तमान में बिहार विधान परिषद के सदस्य डॉ संजय पासवान, राजद नेता और बिहार विधान परिषद के सदस्य डॉ. रामचंद्र पूर्वे, आईटीएफएस के संरक्षक प्रो आनंद कुमार, सिक्किम के पूर्व विधायक पेमा खांडो भूटिया, आईटीएफएस बिहार के अध्यक्ष श्री हरेंद्र कुमार, तिब्बती सांसद वेन तेनपा यारफेल और लोपोन थुप्टेन ग्यालत्सेन शामिल थे।

डॉ. संजय पासवान ने श्रोताओं से तिब्बती मुद्दे का सक्रिय समर्थन करने का आग्रह किया और तिब्बत के मौजूदा संकट को हल करने और तिब्बती पहचान को संरक्षित करने में सरकार के हस्तक्षेप के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने तिब्बत के लिए आजीवन अभियान चलाने और तिब्बत में मूक-बेवश तिब्बतियों को न्याय दिलाने का वचन दिया।

डॉ. राम चंद्र पूर्वे ने उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के लिए आईटीएफएस के प्रति आभार और प्रशंसा व्यक्त की। उन्होंने धर्मशाला में परम पावन १४वें दलाई लामा से आशीर्वाद प्राप्त करने के अपने अनुभव का उल्लेख किया और श्रोताओं को केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और इसकी कार्यप्रणाली, तिब्बती संस्थानों, मठों, तिब्बत संग्रहालय का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने और तिब्बती गैर सरकारी संगठनों के साथ बातचीत करने के लिए धर्मशाला की यात्रा के लिए प्रोत्साहित किया। प्रतिभागियों ने तिब्बती मुद्दे से जुड़ने के लिए धर्मशाला की यात्रा करने में गहरी रुचि व्यक्त की।

तिब्बती सांसद भिक्षु लोपोन थुप्टेन ग्यालत्सेन ने तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता पर प्रकाश डाला। उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान १९१४ के शिमला सम्मेलन और दिल्ली में १९४७ के एशियाई संबंध सम्मेलन में एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में तिब्बत की भागीदारी का संदर्भ दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जे से पहले भारत-तिब्बत सीमा शांतिपूर्ण थी और उसे सैन्य तैनाती की आवश्यकता नहीं थी। उन्होंने भारतीय जनता से तिब्बत को भारत और चीन के बीच एक शांतिपूर्ण बफर जोन के रूप में मानने का आग्रह किया, जिससे दोनों देशों को लाभ होगा और एशिया और दुनिया भर में शांति को बढ़ावा मिलेगा।

भिक्षु लोपोन ने तिब्बत और भारत के बीच सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों पर भी जोर दिया और बताया कि तिब्बती बौद्ध धर्म प्राचीन भारतीय परंपराओं से उत्पन्न हुआ है। यह हिमालयी क्षेत्र की संस्कृति का अभिन्न अंग है। उन्होंने तिब्बती शरणार्थियों, दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की मेजबानी में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए तिब्बती धर्म और संस्कृति को संरक्षित करने के लिए भारत से समर्थन बढ़ाने का आह्वान किया।

भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ), डीआईआईआर,

सीटीए की समन्वयक ताशी देकि ने लोपोन के भाषण का हिंदी में अनुवाद किया और सातवीं शताब्दी से लेकर निर्वासित तिब्बती सरकार की स्थापना तक के तिब्बत के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने तिब्बती धर्मराजा त्रिसोंग देउत्सेन के शासनकाल के दौरान भारत से बौद्ध आचार्यों को बुलाए जाने से शुरू होकर भारत-तिब्बत के बीच सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों पर विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कैसे तिब्बती भारतीय नालंदा परंपरा को वैश्विक स्तर पर संरक्षित और प्रचारित कर रहे हैं।

समन्वयक देकि ने चीनी कब्जे वाले तिब्बत में चल रहे मानवाधिकारों के उल्लंघन पर भी बात की और तिब्बत के आमदो के गोलोग काउंटी में राग्या गंगजोंग शेरिंग नोर्लिंग शैक्षणिक संस्थान को हाल ही में बंद किए जाने को तिब्बती भाषा और संस्कृति को दबाने के चीन के बढ़ते प्रयासों का सबूत बताया। उन्होंने भारत सरकार और यहां की जनता से ऐसी कार्रवाइयों की निंदा करने और तिब्बती पहचान के संरक्षण का समर्थन करने की अपील की। उन्होंने आईटीएफएस के गठन के बारे में विस्तार से बताया, जिसकी शुरुआत लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने चीनी आक्रमण के खिलाफ तिब्बती प्रतिरोध का समर्थन करने के लिए की थी और डॉ. राम मनोहर लोहिया ने 'हिमालय बचाओ' अभियान के द्वारा इसे आगे बढ़ाया था। उन्होंने भारत के सबसे पुराने और सबसे सक्रिय तिब्बत समर्थन समूहों में से एक आईटीएफएस की सक्रिय भूमिका और समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया।

प्रोफेसर आनंद कुमार ने तिब्बत की विशिष्ट पहचान और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा तिब्बत पर बलपूर्वक कब्जा करने से पहले भारत के साथ शांति और सद्भाव के ऐतिहासिक संबंधों पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि इस आक्रमण ने न केवल भारत के लिए महत्वपूर्ण सुरक्षा चुनौतियां पेश की हैं, बल्कि देश का ध्यान और संसाधन शिक्षा और विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों से हटाकर सुरक्षा चिंताओं को दूर करने की ओर मोड़ दिया है।

उद्घाटन सत्र का समापन आईटीएफएस बिहार के अध्यक्ष श्री हरेंद्र कुमार के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। प्रतिभागियों में तिब्बत समस्या की समझ बढ़ाने के लिए 'इंडियन लीडर्स ऑन तिब्बत' और 'भारत और तिब्बत- थैंक यू इंडिया' जैसी पुस्तकें वितरित की गईं। आईटीसीओ टीम ने तिब्बत के बारे में जागरुकता को बढ़ावा देने के लिए समूहों में और एक-एक करके प्रतिभागियों के साथ बातचीत की।

दूसरे दिन बिहार में क्षेत्रीय प्रतिनिधियों द्वारा पिछली गतिविधियों की समीक्षा पर एक सत्र का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता डॉ. हरेंद्र कुमार ने तथा संचालन प्रो. उमेश नीरज ने किया। इसमें युवाओं की भागीदारी और क्षेत्रीय स्तर पर तिब्बत जागरुकता गतिविधियों को लेकर ध्यान केंद्रित किया गया। आईटीएफएस की युवा शाखा के नेता प्रशांत गौतम ने सात संभागों (२३ जिलों को कवर करते हुए) के युवा प्रतिनिधियों के साथ भारत-तिब्बत मैत्री को बढ़ाने में युवाओं की भागीदारी के महत्व पर बल दिया।

समापन सत्र में स्वामी सहजानंद सरस्वती ट्रस्ट के डॉ. सत्यजीत सिन्हा, आईटीएफएस बिहार के महासचिव मनोज कुमार और तिब्बती सांसद भिक्षु लोपोन थुप्टेन ग्यालत्सेन और टेम्पा यारफेल ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि डॉ. सत्यजीत सिन्हा ने सबसे पहले परम पावन १४वें दलाई लामा को विश्व शांति में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित करते हुए सभा को संबोधित किया और जीवन भर तिब्बती लोगों के संघर्ष का समर्थन करने की अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

जगजीवन राम संसदीय अध्ययन और राजनीतिक शोध संस्थान के निदेशक डॉ. नरेंद्र पाठक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सेमिनार का समापन हुआ।

समापन सत्र के दौरान आईटीएफएस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार ने दो दिवसीय संगोष्ठी के दौरान पारित किए गए प्रस्तावों और कार्ययोजनाओं को प्रस्तुत किया। पारित प्रस्तावों में भारत सरकार से परम पावन १४वें दलाई लामा को सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित करने और उन्हें भारतीय संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करने के लिए आमंत्रित करने का आग्रह शामिल है। संगोष्ठी में लद्दाख के साथ एकजुटता भी व्यक्त की गई, हिमालयी क्षेत्र के लिए 'हिमालय नीति' बनाने की मांग की गई, जबकि लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश में चीनी घुसपैठ की निंदा की गई। इसने १९६२ के संसदीय प्रस्ताव के अनुसार चीन द्वारा कब्जा की गई भूमि को वापस पाने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दोहराया। प्रस्तावों में बिहार के राज्यपाल से दलाई लामा को बिहार विधान मंडल को संबोधित करने के लिए आमंत्रित करने और भारत में लघु और कुटीर उद्योगों की रक्षा के लिए चीनी सामानों के बहिष्कार और उनके आयात पर प्रतिबंध लगाने का आह्वान किया गया।

सेमिनार में बिहार और झारखंड सरकारों से बौद्ध विरासत को संरक्षित करने और अपने राज्यों में तिब्बती स्वेटर बाजारों को सुविधा प्रदान करने का आग्रह किया गया। साथ ही १० दिसंबर को मानवाधिकार दिवस के अवसर पर इसे सेमिनार और प्रदर्शनों सहित राज्यव्यापी कार्यक्रमों के साथ मनाने का आग्रह किया गया। तिब्बती जनक्रांति दिवस को याद करने के लिए १० मार्च २०२५ को राज्यस्तरीय कार्यक्रम आयोजित करने और राष्ट्रीय नेतृत्व से नई दिल्ली में एक केंद्रीय कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध करने का प्रस्ताव पारित किया गया। इस मुद्दे के साथ अधिक से अधिक युवाओं को जोड़ने के लिए सेमिनार में बिहार भर के विश्वविद्यालयों में सेमिनार, संगोष्ठी, वाद-विवाद और निबंध-लेखन प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रचार-प्रसार को और विस्तार देने का आह्वान किया गया। इसके अतिरिक्त, सेमिनार में बोधगया में एक संस्थान स्थापित करने के लिए परम पावन १४वें दलाई लामा को जमीन देने के लिए बिहार सरकार और इसके मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रति आभार प्रकट किया गया।

आईटीएफएस के संरक्षक डॉ. आनंद कुमार ने जगजीवन राम संसदीय अध्ययन और राजनीतिक शोध संस्थान के निदेशक श्री नरेंद्र पाठक को डॉ राम मनोहर लोहिया लिखित पुस्तक (अंग्रेजी संस्करण: इंडिया, चाइना एंड नार्दर्न फ्रंटियर) का हिंदी संस्करण-'तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन' भेंट किया और अनुरोध किया कि इसे जगजीवन राम संसदीय अध्ययन और राजनीतिक शोध संस्थान के पुस्तकालय में रखा जाए। इस पुस्तक में

डॉ. लोहिया ने भारत, चीन और तिब्बत के भू-राजनीतिक गतिशीलता को समझने के महत्व पर बल दिया है।

सेमिनार में तिब्बत मुद्दे को लेकर भारत के अटूट समर्थन की पुष्टि की गई और अधिक जागरुकता और युवाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए काम करने का संकल्प व्यक्त किया गया। इसमें बिहार के सात प्रमंडलों के २३ जिलों से आईटीएफएस के १५० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया। इनमें पटना प्रमंडल के पटना, नालंदा, भोजपुर, रोहतास और कैमूर; तिरहुत प्रमंडल से मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, वैशाली, शिवहर, पूर्वी चंपारण (मोतिहारी) और पश्चिम चंपारण (बेतिया); मुंगेर प्रमंडल से मुंगेर, बेगुसराय; मगध प्रमंडल से गया, नवादा; और कोसी प्रमंडल से सुपौल, सहरसा, मधेपुरा से आए सदस्य शामिल रहे।

◆ १९. डीआईआईआर ने तिब्बत में मानवाधिकार उल्लंघन के खिलाफ ७९वें यूएनजीए में बयान देने वाले १५ देशों के प्रति आभार व्यक्त किया

०६ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) का सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) ने अमेरिका के साथ-साथ ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आइसलैंड, जापान, लिथुआनिया, नीदरलैंड्स, न्यूजीलैंड, नॉर्वे, स्वीडन और ब्रिटेन के प्रति गहरा आभार व्यक्त करते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है। इन उपरोक्त १५ देशों ने हाल ही में संपन्न संयुक्त राष्ट्र की ७९वीं महासभा के दौरान संयुक्त बयान जारी कर तिब्बत और पूर्वी तुर्किस्तान में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना द्वारा मानवाधिकारों के चल रहे उल्लंघन की विशेष रूप से निंदा की है।

सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग में कालोन नोरज़िन डोल्मा ने कहा, 'सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग, केंद्रीय तिब्बती प्रशासन और तिब्बत के अंदर तथा निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों की ओर से मैं ऑस्ट्रेलिया के नेतृत्व में १५ देशों के गठबंधन और उनके नेताओं की सराहना करता हूं, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में चीनी कब्जे वाले तिब्बत की गंभीर स्थिति को उठाकर न्याय, मानवाधिकार और शांति के लिए अपनी प्रतिबद्धता को साहसपूर्वक व्यक्त किया है। यह समर्थन एक सार्थक कदम है, फिर भी हम जानते हैं कि पीआरसी सरकार के औपनिवेशिक कब्जे के तहत तिब्बतियों के सामने आने वाली लगातार चुनौतियों और मानवाधिकारों के उल्लंघन को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य आगे भी जारी रहेगा। संयुक्त राष्ट्र में आपका सामूहिक समर्थन एक महत्वपूर्ण संकेत है। यह अंतरराष्ट्रीय एकजुटता और कार्रवाई को आदर्श रूप में दर्शाता है। हम आगे भी वास्तविक शांति और न्याय प्राप्त करने की दिशा में चल रहे सामूहिक प्रयासों की आशा करते हैं।'

तिब्बत के भीतर तिब्बतियों के समक्ष वर्तमान में मौजूद चुनौतियों के मद्देनजर तिब्बती लोगों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर चीन के कुकृत्यों के बारे में मुखर बयान इन भयावह स्थितियों को कम करने और तिब्बत के भीतर झेली जा रही पीड़ा को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। तिब्बतियों के समक्ष मौजूद चुनौतियों में राजनीतिक विचारों की शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए लोगों को हिरासत में लेना, यात्रा पर प्रतिबंध, बलपूर्वक श्रम व्यवस्था, बच्चों को उनके परिवारों से अलग कर आवासीय स्कूलों में रखना और भाषाई, सांस्कृतिक, शैक्षिक और धार्मिक अधिकारों का हनन शामिल है।

◆ २०. बौद्ध धर्म के माध्यम से एशिया को मजबूत बनाने के लिए 'एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन'

१३ नवंबर, २०२४

धर्मशाला। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) ने ०५ और ०६ नवंबर को दो दिवसीय 'प्रथम एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन २०२४' का आयोजन नई दिल्ली के अशोक होटल में किया। सम्मेलन का विषय था 'एशिया को मजबूत बनाने में बौद्ध धर्म की भूमिका'। शिखर सम्मेलन के लिए परम पावन दलाई लामा का लिखित संदेश अंतरराष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ के महासचिव आदरणीय शार्त्से खेंसुर जंगचुप चोएडेन ने पढ़ा।

शिखर सम्मेलन का उद्घाटन भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने किया। वह सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुईं। उनके साथ केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत और केंद्रीय संसदीय कार्य और अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री श्री किरेन रिजिजू भी शामिल हुए। उनकी उपस्थिति ने अंतर-धार्मिक संवाद और आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग के आधिकारिक प्रवक्ता और अंतरराष्ट्रीय संबंध के अतिरिक्त सचिव श्री तेनज़िन लेक्षय ने तिब्बती बौद्ध धर्म पर एक प्रस्तुति दी, जिसमें इसके ऐतिहासिक और आध्यात्मिक महत्व और आज की दुनिया में इसकी निरंतर प्रासंगिकता पर विस्तार से चर्चा की गई। उन्होंने परम पावन दलाई लामा की शिक्षाओं और उनके वैश्विक प्रभाव पर भी चर्चा की, जिसमें बौद्ध मूल्यों, विज्ञान और धर्म के उनके संदेशों पर जोर दिया गया है।

शिखर सम्मेलन में कई प्रतिष्ठित बौद्ध गणमान्य हस्तियों ने भाग लिया। इनमें परम पवित्र मेनरी ट्रिज़िन रिनपोछे, क्याब्जे लिंग चोक्त्रुल रिनपोछे, क्याब्जे कुंडलिंग रिनपोछे, आदरणीय मिंग्युर रिनपोछे, आदरणीय यांगटेन रिनपोछे आदि शामिल थे। एशिया भर की बौद्ध परंपराओं की विशाल परंपरा से कई वरिष्ठ भिक्षु, मठाधीश और आध्यात्मिक प्रमुख शिखर सम्मेलन में शामिल हुए और समकालीन वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में बौद्ध धर्म की क्षमता पर चर्चा की।

दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान मुख्य चर्चाएं सामाजिक सद्भाव, पारिस्थितिक स्थिरता को बढ़ावा देने और अंतर-धार्मिक संवाद को बढ़ावा देने में बौद्ध धर्म की भूमिका पर केंद्रित रहीं, जो एशिया के विविध और जटिल समाजों के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन- २०२४ ने शांतिपूर्ण भविष्य के लिए ज्ञान साझा करने पर ध्यान केंद्रित करते हुए एशिया के भीतर सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक-राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने में बौद्ध धर्म की भूमिका पर संवाद जारी रखने के महत्व को रेखांकित किया।

कुल मिलाकर, शिखर सम्मेलन में बौद्ध नेताओं, भिक्षुओं, विद्वानों, शिक्षकों और साधकों सहित ७०० से अधिक लोगों ने भाग लिया, जो इस क्षेत्र में शांति और एकता की शक्ति के रूप में बौद्ध शिक्षाओं में गहरी रुचि को दर्शाता है।

◆ २१.१३वीं तवांग तीर्थयात्रा देशभक्ति पूर्ण भव्यता के साथ रवाना

२३ नवंबर २०२४, भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय (आईटीसीओ) की रिपोर्ट

गुवाहाटी। 'तिरंगा फार कैलाश मानसरोवर' नारे के साथ १३वीं तवांग तीर्थयात्रा को १९ नवंबर २०२४ को गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। भारत-तिब्बत सहयोग मंच (बीटीएसएम) के असम प्रांतीय इकाई द्वारा आयोजित यह समारोह भारत और तिब्बत की साझा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का प्रतीक रहे तीर्थयात्राओं के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

कार्यक्रम में आरएसएस के वरिष्ठ प्रचारक और बीटीएसएम के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार की अहम उपस्थिति रही। इंद्रेश कुमार ने २० नवंबर २०२४ को आधिकारिक रूप से यात्रा को हरी झंडी दिखाई। भारत के २३ राज्यों के लगभग २७५ उत्साही प्रतिभागियों को लेकर तवांग तक की सप्ताह भर की यात्रा रवाना हुई। प्रतिभागियों का यह उत्साह तिब्बती मुद्दे का समर्थन करने के लिए भारतीय लोगों की सामूहिक इच्छा को दर्शाता है।

यात्रा के उद्घाटन समारोह की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई, इसके बाद प्रतिष्ठित बिहू नृत्य सहित अनेक प्रकार के जीवंत असमिया सांस्कृतिक प्रदर्शन हुए। पारंपरिक असमिया संगीत वाद्ययंत्रों के साथ लछितर अहबन के भावनात्मक प्रस्तुतीकरण ने देशभक्ति का समां बांध दिया। सत्र की अध्यक्षता भारत-तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक श्री इंद्रेश कुमार, तिब्बती सांसद श्रीमती शेरिंग डोल्मा, भाजपा के सम्मे और त्रिपुरा के सचिव रवींद्र राजी जी, बीटीएसएम असम के अध्यक्ष अहरी कैलाश सरमा, बीटीएसएम के कार्यकारी राष्ट्रीय उर्वशी महंत, अमेरिका में विश्व प्रसिद्ध चिकित्सा वैज्ञानिक डॉ. बिकुल दास, अरुणाचल प्रदेश से पूर्व सांसद श्री रिनचेन खांडो खिरमे, बीटीएसएम के असम प्रांत के महासचिव डॉ. बिचन कुमार सिंघा और तिब्बती युवा कांग्रेस के अध्यक्ष गोन्पो धोंडुप ने की।

समारोह के दौरान, तिब्बती संसद सदस्य श्रीमती शेरिंग डोल्मा ने श्री इंद्रेश कुमार को परम पावन १४वें दलाई लामा की आत्मकथा का का हिंदी संस्करण 'मेरा देश, मेरे देशवासी' भेंट किया। समारोह में प्रस्तुति आईटीसीओ, डीआईआईआर, सीटीए की समन्वयक ताशी देकि ने किया।

तिब्बती संसद सदस्य श्रीमती शेरिंग डोल्मा ने सभा को संबोधित करते हुए सीसीपी शासन के तहत तिब्बतियों की दुर्दशा पर भावुकता से प्रकाश डालते हुए कहा, 'सीसीपी की औपनिवेशिक शैली के आवासीय विद्यालय नीति का उद्देश्य तिब्बतियों को अपने में आत्मसात कर लेना है। मैं भारत सरकार से तिब्बतियों की आवाज़ बनने की अपील करती हूं। भारत-तिब्बत सीमा एक तथ्य है और तिब्बत संघर्ष आंतरिक रूप से भारत के राष्ट्रीय हितों से जुड़ा हुआ है। तिब्बत संघर्ष के समाधान के बाद भारत और तिब्बत के बीच सच्चा भाईचारा होगा।'

उन्होंने आगे तिब्बत मुद्दे को तत्काल हल करने की अनिवार्यता पर जोर दिया क्योंकि परम पावन १४वें दलाई लामा अपने ९०वें जन्मदिन के करीब पहुंच रहे हैं।

बीटीएसएम के राष्ट्रीय महासचिव श्री पंकज गोयल ने बीटीएसएम की २५ वर्षों की यात्रा के बारे में बात की। उन्होंने कहा, 'बीटीएसएम ने तिब्बत की आवाज को वैश्विक स्तर पर एकजुट करने और बढ़ाने के लिए अथक प्रयास किया है। हम सभी से चीनी उत्पादों का बहिष्कार करने का आग्रह करते हैं - न केवल उन्हें खरीदने से इनकार करें, बल्कि उनकी बिक्री को भी रोकें। यह यात्रा केवल ३०० यात्रियों की आवाज नहीं है। जब हम कहते हैं, 'चीन की सीमा चीनी दीवार, बाकी सब कब्ज़ा है' तो यह १.४५ अरब भारतीयों की आवाज बनकर निकलती है।'

अरुणाचल प्रदेश से पूर्व सांसद श्री रिनचेन खांडो खिरमे ने भारत के साथ तिब्बत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'भारतीय संसद में १९६२ के प्रस्ताव ने सीसीपी द्वारा तिब्बत पर अवैध कब्जे को हल करने के लिए भारत की प्रतिबद्धता को मान्यता दी। १९६० में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में कलकत्ता में तिब्बत सम्मेलन हुआ, जिसमें भारत ने तिब्बत पर बातचीत की शुरुआत की। दुर्भाग्य से पंचशील समझौते के बाद जब चीन १९६२ के युद्ध की तैयारी कर रहा था, भारत को इस बात की जानकारी नहीं थी।'

श्री इंद्रेश कुमार ने अपने संबोधन में बीटीएसएम के मिशन को उजागर करते हुए कहा, 'बीटीएसएम की शुरुआत 'तिब्बत की आजादी' के नारे के साथ हुई थी। जब चीन के वैश्विक प्रभुत्व के बारे में पूछा जाता है तो मैंने एक पुरानी कहानी सुनाता हूं कि 'एक चींटी हाथी के कान में घुस गई और हाथी मर गया।' सत्य, चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, किसी भी चुनौती से पार पा सकता है। तवांग यात्रा उस सत्य का प्रतिनिधित्व करती है।'

उन्होंने २५ साल पहले धर्मशाला की अपनी यात्रा को भी याद किया, जहां

उन्होंने तिब्बती आंदोलन की प्रामाणिकता देखी और पुष्टि की कि पवित्र कैलाश मानसरोवर बिना पासपोर्ट के सभी के लिए सुलभ होना चाहिए।

यात्रा गुवाहाटी से शुरू हुई और तवांग पहुंचने से पहले मोंगलदाई, रोता, बोमडिला और सेला दर्रे से गुजरेगी। १३वीं तवांग तीर्थयात्रा २०२४ तिब्बत के लिए भारत के स्थायी समर्थन और क्षेत्र में शांति और न्याय को बढ़ावा देने की उसकी प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली बयान है।

◆ २२. तिब्बत सूचना कार्यालय ने 'चाइनीज अलायंस फॉर डेमोक्रेसी' की संगोष्ठी में भाग लिया

१३ नवंबर २०२४, तिब्बत कार्यालय, कैनबरा द्वारा तैयार रिपोर्ट

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी विश्वविद्यालय में इंटरनेशनल चाइनीज अलायंस फॉर डेमोक्रेसी (अंतरराष्ट्रीय चीनी लोकतंत्र गठबंधन)' द्वारा ०९ नवंबर से आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में प्रमुख चीनी लोकतांत्रिक हस्तियों, विद्वानों और ताइवान के नेताओं ने मुख्य भूमि चीन के भीतर लोकतांत्रिक आंदोलनों को प्रेरित करने में ताइवान के लोकतांत्रिक मॉडल की संभावित भूमिका के बारे में बात करने के लिए इकट्ठा हुए। इस कार्यक्रम में तिब्बत सूचना कार्यालय (जिसे तिब्बत कार्यालय भी कहा जाता है) की चीनी संपर्क अधिकारी श्रीमती दावा सांगमो ने भी भाग लिया।

इंटरनेशनल चाइनीज अलायंस फॉर डेमोक्रेसी के ऑस्ट्रेलिया इकाई के अध्यक्ष डॉ जिंगजिंग झोंग द्वारा संचालित इस संगोष्ठी का उद्देश्य न केवल लोकतांत्रिक आदर्शों पर चर्चा करना था, बल्कि एक सामान्य उद्देश्य के लिए लोकतंत्र समर्थक ताकतों को एकजुट करने के लिए व्यावहारिक रणनीति विकसित करना भी था।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि वांग डैन थे जो तियानमेन चौक के लोकतंत्र समर्थक आंदोलन के एक प्रमुख नेता भी रहे हैं। वांग डैन ने चीनी लोकतांत्रिक आंदोलन को मजबूत करने के महत्व पर प्रभावशाली भाषण दिया। उन्होंने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छह प्रमुख रणनीतियों की रूपरेखा तैयार की, जिसमें एक मजबूत समर्थन आधार का निर्माण, स्थानीय और राष्ट्रीय राजनीति में अधिक सक्रिय रूप से शामिल होना और लोकतंत्र समर्थक ताकतों के बीच एकता को बढ़ावा देना शामिल है। उन्होंने चीन-तिब्बत संबंधों पर भी टिप्पणी की, निर्वासित तिब्बती सरकार के लिए प्रशंसा व्यक्त की और सुझाव दिया कि चीनी लोकतंत्रवादी केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की शासन रणनीतियों से मूल्यवान सबक सीख सकते हैं।

चीनी संपर्क अधिकारी श्रीमती दावा सांगमो ने अपने 'साइनो-तिब्बत सिविल फ्रेंडशिप एंड इट्स पाथ फॉरवर्ड (चीन-तिब्बत नागरिक समाज मैत्री और इसके आगे की राह)' शीर्षक भाषण में ताइवान के लोकतंत्र को चीन में लोकतांत्रिक सुधार के लिए एक संभावित मॉडल के रूप में स्वीकार किया। हालांकि, उन्होंने चीनी लोकतंत्रवादियों और तिब्बतियों के बीच गहन सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया, जिससे उनकी साझेदारी दोगुने स्तर तक बढ़ सके। चीन और तिब्बत के बीच घनिष्ठ भौगोलिक और ऐतिहासिक संबंधों को देखते हुए उन्होंने तर्क दिया कि तिब्बत की ऐतिहासिक स्वतंत्रता और इसकी वर्तमान स्थिति को कब्जे वाले क्षेत्र के रूप में स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। उन्होंने दोनों क्षेत्रों के बीच आपसी सम्मान और रचनात्मक संवाद की वकालत करते हुए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के साधन के रूप में मध्यम मार्ग नीति के समर्थन पर भी जोर दिया।

सेमिनार में अमेरिका के चीनी डेमोक्रेट्स ने भी भाग लिया। इनमें डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ चाइना के नेशनल कमेटी के उपाध्यक्ष लिकुन चेन, इंटरनेशनल चाइनीज अलायंस फॉर डेमोक्रेसी के उपाध्यक्ष और महासचिव शिनमिन किंग और चाइनीज डेमोक्रेसी एंड ह्यूमन राइट्स अलायंस के अध्यक्ष ज़िउहोंग जिंग शामिल थे। इन हस्तियों ने लोकतांत्रिक ताकतों के बीच निरंतर सहयोग पर एकजुट होकर किए जानेवाले समझौते की आवश्यकता को रेखांकित किया।

◆ २३. अवैध रूप से कैद किए गए तिब्बती पर्यावरणविद् को खराब स्वास्थ्य के कारण १५ साल के बाद जेल से रिहा किया गया

२१ नवंबर २०२४, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और मानवाधिकार डेस्क, तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन, डीआईआईआर

धर्मशाला। तिब्बती पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता कर्मा समद्रुप को १५ साल की जेल की सजा काटने के बाद रिहा कर दिया गया। उन्हें सजा के दौरान पांच साल तक राजनीतिक अधिकारों से भी वंचित रखा गया था। निर्वासन में रह रहे तिब्बती समुदाय की मीडिया रिपोर्टों को देखें तो पता चलता है कि उनको दी गई सजा के चीनी दस्तावेज से संकेत मिलता है कि कर्मा समद्रुप की कैद अभी १९ नवंबर तक जारी रहेगी। कुछ सबूतों से पता चलता है कि उन्हें १८ नवंबर २०२४ के आसपास रिहा किया जा सकता है। कथित तौर पर समद्रुप पीठ से संबंधित बीमारी से पीड़ित हैं, जो उन्हें रिहाई के बाद बिना सहारे के अपने आप चलने में बाधा डाल सकती है।

कर्मा समद्रुप को ०३ जनवरी २०१० को गिरफ्तार किया गया और जबरन अज्ञात स्थान में ले जाया गया। कई महीनों तक हिरासत में रखने और अकल्पनीय यातना, पूछताछ और जबरदस्ती के बाद उसी वर्ष २४ जून को यान्की हुई झिंजियांग (पूर्वी तुर्केस्तान) जिला न्यायालय ने कब्र खुदाई और सांस्कृतिक अवशेष चोरी के आरोप में उन्हें अवैध तरीके से १५ साल की जेल की सजा सुनाई। हालांकि ये आरोप मूल रूप से उनके खिलाफ १९९८ में पूर्वी तुर्केस्तान में लगाए गए थे और बाद में उन्हें हटा दिया गया था। इस बार इस मुकदमे को फिर से सक्रिय किया गया था।

उन्हें अपैन कैद भाइयों- रिनचेन समद्रुप और चिमे नामग्याल से मिलने के बाद गिरफ्तार किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि चीनी अदालत द्वारा उनके खिलाफ की गई कानूनी कार्रवाई उन्हें अपने भाइयों की रिहाई के

लिए किए जा रहे उनके प्रयासों के खिलाफ एक सुनियोजित प्रतिशोधात्मक साजिश थी। उनके भाइयों को पहले अगस्त २००९ में हिरासत में लिया गया था रिनचेन समद्रुप को पांच साल की जेल की सज़ा सुनाई गई और ०८ अगस्त २०१४ को ल्हासा जेल से रिहा कर दिया गया। चिमे नामग्याल को श्रम शिविर में लगभग डेढ़ साल की सज़ा सुनाई गई।

कर्मा समद्रुप के मामले ने चीन की विवादास्पद न्यायिक प्रक्रिया को भी उजागर कर दिया। क्योंकि उन्होंने पुलिस अधिकारियों पर हिरासत के दौरान व्यवस्थित यातना देने का आरोप लगाया, मई २०१० में अवैध रूप से सबूत इकट्ठा करने के खिलाफ़ सरकार के नए नियमों को चुनौती दी। उन्होंने २२ जून २०१० को अपने मुक़दमे के दौरान खुलासा किया कि चीनी अधिकारियों ने उन्हें बार-बार पीटा, साथी बंदियों को उन्हें पीटने का आदेश दिया, उन्हें कई दिनों तक सोने नहीं दिया गया और उन्हें एक ऐसा पदार्थ दिया जिससे उनकी आँखों और कानों से खून बहने लगा। यह सब उनसे जबरन अपराध कबूल करवाने के लिए किया गया।

वर्तमान में लगभग ५६ वर्षीय कर्मा समद्रुप तिब्बत के गोंजो काउंटी के सोम्पा गांव में रहते हैं। उन्होंने और उनके भाइयों ने पुरस्कार विजेता अचुंग सेंगे नामग्याल स्वैच्छिक पर्यावरण संरक्षण संघ की स्थापना की है।

◆ २४. चीनी अधिकारियों द्वारा भिक्षुओं और नागरिकों को निशाना बनाए जाने के क्रम में न्गाबा से चार तिब्बतियों की अघोषित गिरफ़्तारी

०१ नवंबर २०२४, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और मानवाधिकार डेस्क, तिब्बत एडवोकेसी अनुभाग, डीआईआईआर

तिब्बत के न्गाबा काउंटी स्थित कीर्ति मठ के दो भिक्षु- लोबसंग समतेन और लोबसंग त्रिनले (या त्रिनपो) के अलावा न्गाबा काउंटी से शेरिंग ताशी और वांगकी नामक दो नागरिकों को भी चीनी अधिकारियों द्वारा गुप्त रूप से गिरफ़्तार कर लिया गया है। यह काउंटी पारंपरिक रूप से अमदो प्रांत का हिस्सा है। उनके गुप्त रूप से हिरासत में लिए जाने के बाद से उनके ठिकाने और उनकी सेहत के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

हाल ही में हिरासत में लिए गए लोगों में ५३ वर्षीय लोबसंग समतेन शामिल हैं, जो गोलोग के चिगड्रिल काउंटी में खांगसर (चीनी: कांगसाई) के एक वरिष्ठ भिक्षु हैं। समतेन कीर्ति मठ में जूनियर मंत्र गुरु के रूप में कार्य करते हैं और करम्पा (गेशे) की उपाधि प्राप्त हैं। तिब्बती मीडिया सूत्रों के अनुसार, २०११ में न्गाबा मठ से सामूहिक गिरफ्तारी के समय हिरासत में लिए गए ३०० भिक्षुओं में लोबसंग समतेन भी शामिल थे। न्गाबा काउंटी के रोंग खारसा (चीनी: कुआशा) से ४० वर्षीय लोबसंग त्रिनले (जिसे त्रिनपो के नाम से भी जाना जाता है) को भी हिरासत में लिया गया है, जो कि कीर्ति मठ में तीसरे वर्ष के विनय के छात्र है और अनुष्ठान समारोहों का आयोजन करते हैं। नागरिक बंदियों में वर्तमान में न्गाबा काउंटी में रह रही चार बच्चों की मां ४३ वर्षीय वांगकी और उनके भाई ४१ वर्षीय शेरिंग ताशी हैं। दोनों ही कलको और जिग्जे त्सो के बच्चे हैं, जो रोंग खारसा के हरित्संग परिवार से हैं। सूत्रों से पता चलता है कि भारत में रहने वाले तिब्बतियों के साथ कथित संबंध रखने के कारण हरित्संग परिवार के कई सदस्यों को हिरासत में लिया गया है। सभी बंदियों का वर्तमान ठिकाना अज्ञात है।

अनेक रिपोर्ट में न्गाबा क्षेत्र में निगरानी और प्रतिबंधों को बढ़ाने का संकेत दिया गया है, जिसमें कीर्ति मठ और आसपास के क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस बीच अघोषित हिरासत का एक पैटर्न सामने आया है, जिसमें रिहा किए गए बंदियों को उनकी गिरफ्तारी, आरोपों या हिरासत के स्थानों के बारे में कोई भी जानकारी देने से प्रतिबंधित किया गया है। इस कृत्य से तिब्बतियों के खिलाफ चीनी अधिकारियों के प्रवर्तन और गैरकानूनी कार्रवाइयों के बारे में सार्वजनिक तौर पर जानकारी उजागर किए जाने को गंभीर रूप से प्रतिबंधित करता है।

चीनी अधिकारियों ने न्गाबा क्षेत्र में १८ वर्ष से कम आयु के सभी भिक्षुओं को मठ छोड़ने और चीनी सरकार द्वारा संचालित आवासीय स्कूलों में जाने का आदेश दिया है। कीर्ति मठ का प्रारंभिक अध्ययन संस्थान, जहां पहले १४०० से अधिक तिब्बती छात्र और शिक्षक अध्ययन- अध्यापन करते थे। वहां अब केवल १८ वर्ष या उससे अधिक आयु के लगभग १०० छात्र ही बचे है। इसके अलावे वहां के अन्य मठ संस्थानों को बंद कर दिया गया है।

इसके अलावा, न्गाबा काउंटी और न्गाबा प्रिफेक्चर में नई शिक्षा नीतियों के अनुसार आवासीय विद्यालयों में भाषा कक्षाओं को छोड़कर सभी विषयों को विशेष रूप से चीनी भाषा के माध्यम से पढ़ाया जाना आवश्यक कर दिया गया है। ये उपाय तिब्बती भाषा, धार्मिक रिवाजों और सांस्कृतिक पहचान को युवा पीढ़ी तक पहुंचाने से रोकने के लिए प्रशासनिक और बलपूर्वक दोनों तरीकों का उपयोग करने वाली व्यापक नीति का हिस्सा हैं।

चीनी अधिकारियों को तुरंत इन मनमाने ढंग से हिरासत में लिए जाने को समाप्त करना चाहिए और उन चार तिब्बतियों के ठिकाने के बारे में सटीक जानकारी प्रदान करनी चाहिए जो वर्तमान में लापता हैं। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन ने पिछले सितंबर में अधिकारियों द्वारा न्गाबा के कीर्ति मठ और ज़ोगे काउंटी के दो मठों से १७०० से अधिक युवा भिक्षुओं को जबरन हटाने और बच्चों या उनके माता-पिता की सहमति के बिना चीनी सरकार द्वारा संचालित आवासीय स्कूलों में उनका जबरन दाखिला कराने की रिपोर्टों पर गंभीर चिंता जताई थी।

◆ २५. तिब्बत में मंदारिन में भाषण प्रतियोगिताएं मूल तिब्बती भाषा को मिटाने का प्रयास : विशेषज्ञ

१३ नवंबर २०२४, आरएफए तिब्बती

चीनी सरकार तिब्बत में मंदारिन को 'राष्ट्रीय जनभाषा' के रूप में बढ़ावा दे रही है।

तिब्बत में चीनी अधिकारी मंदारिन भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित कर रहे हैं, जिसके बारे में विश्लेषकों ने रेडियो फ्री एशिया (आरएफए) को बताया कि यह तिब्बती भाषा और संस्कृति को मिटाने की बीजिंग की एक और चाल है।

०९ और १० नवंबर को लगभग ३३ तिब्बतियों ने क्षेत्रीय राजधानी ल्हासा में राष्ट्रीय आम जन भाषण प्रतियोगिता में भाग लिया।

हालांकि देश में चीनी भाषा की कई बोलियां प्रचलित हैं। साथ ही तिब्बती और उग्यूर सहित कई अन्य भाषाएं भी हैं। लेकिन मंदारिन आधिकारिक भाषा है और बीजिंग चाहता है कि सभी नागरिक इसका उपयोग करें। जबकि अन्य भाषाओं को संरक्षित करने पर बहुत कम या कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

क्षेत्र के दो सूत्रों ने आरएफए तिब्बती को बताया कि अब तिब्बत भर के मठों और स्कूलों में अक्सर मंदारिन भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं।

एक सूत्र ने कहा, 'वास्तविकता यह है कि छोटे बच्चों को चीनी भाषा सीखने के लिए मजबूर किया जा रहा है, जिसका तिब्बती भाषा और सांस्कृतिक रिवाजों के उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है।'

अक्तूबर में, शिगात्से (चीनी : रिकाज़े) शहर में एक समान राष्ट्रीय भाषा भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई थी, जिसका विषय था 'नए युग का एक वफादार और ईमानदार देशभक्त होना।'

इस बीच, नागचू (नाकू) शहर में भिक्षुओं और भिक्षुणियों को 'राष्ट्रीय भाषण' प्रतियोगिताओं के दौरान मंदारिन में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की प्रशंसा करने के लिए कहा गया।

१९५१ में चीन द्वारा कब्जा किए जाने से पहले तिब्बत एक स्वतंत्र देश था, जिसकी अपनी राष्ट्रीय भाषा थी।

लेकिन चीन ने तिब्बती भाषा के उपयोग को सीमित करने के लिए सक्रिय रूप से सुनियोजित काम किया है।

२०२० से सरकार ने तिब्बत में भाषा अधिकारों पर कड़े प्रतिबंध लगाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप निजी तिब्बती स्कूल बंद हो गए हैं और पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षण सामग्री के मानकीकरण के नाम पर चीनी भाषा की शिक्षा पर अधिक जोर दिया जा रहा है।

२०२१ में अधिकारियों ने तिब्बती बच्चों को सर्दियों की छुट्टियों के दौरान अनौपचारिक भाषा कक्षाओं या कार्यशालाओं में भाग लेने से भी मना करना शुरू कर दिया। कार्यकर्ताओं ने चेतावनी दी है कि ये उपाय तिब्बती भाषा के अस्तित्व को खतरे में डाल सकते हैं।

निशाने पर युवा तिब्बती और ग्रामीण समुदाय

सोमवार को नाम उजागर न करने की शर्त पर बात करते हुए एक तिब्बती सूत्र ने कहा कि, ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले तिब्बतियों के लिए अब मंदारिन भाषा में बोलना और चीनी भाषा में लिखना अनिवार्य किया जा रहा है।

ल्हासा में नवीनतम प्रतियोगिता भी तिब्बती कृषि और खानाबदोश समुदायों के साथ-साथ युवा तिब्बतियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए आयोजित की गई थी।

प्रतियोगियों को पांच समूहों में विभाजित किया गया था। इनमें से एक समूह किसानों और खानाबदोशों का था, दूसरा शिशुओं का था। इसके अलावा तीन अन्य समूह स्कूली बच्चों, युवा-किशोरों और वयस्कों के थे।

*****

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अभार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीचे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

November, 2024, Years: 45 Issue: 11 Regd No. : RNI 34636-79

१३वीं तवांग तीर्थयात्रा देशभक्ति पूर्ण भव्यता के साथ रवाना

इटली के दानदाताओं ने बाइलाकुप्पे में लुगसुंग समदुप्लिंग तिब्बती बस्ती का दौरा किया

पटना में 'तिब्बत मुक्ति साधना और भारत-चीन संबंध' पर दो दिवसीय संगोष्ठी आयोजित